

अस्तर पर छपे मूर्तिकला के प्रतिरूप में राजा शुद्धोत्तन के दरबार का वह दृश्य जिसमें तीन भविष्यवक्ता भगवान बौद्ध की माँ—रानी माया का व्याख्या कर रहे हैं। उनके नीचे बड़ा लिपिक व्याख्या का विवरण लिख रहा है। भारत में नखन कला का सम्भवतः सबसे प्राचीन और विद्वलिखित अभिलेख।

नागार्जुनखोंडा दूसरी सदी ई
भोजपुर राष्ट्रीय संग्रहालय

भारतीय साहित्य के निर्माता

अप्पर

लेखक

जी वन्मीकनाथन

अनुवादिका
इन्दिरा 'नूपुर'



साहित्य अकादेमी

Appar Hindi translation by Indira 'Noopur' of G. Vanmikanathan's monograph in English on the Tamil saint poet, Sahitya Akademi New Delhi (1987) Rs 5

साहित्य अकादेमी

प्रथम संस्करण 1987

साहित्य अकादेमी

प्रधान कार्यालय

रवींद्र भवन 35 फीरोजशाह रोड नयी दिल्ली 110001

क्षेत्रीय कार्यालय

ब्लॉक V बी रवींद्र सरोवर स्टेडियम, कलकत्ता 700029

29 एडम्स रोड (द्वितीय मंजिल), तनामपेट मद्रास 600018

172 मुम्बई मराठी ग्रंथ मण्डलालय भाग, दादर बम्बई 400014

मूल्य

पाँच रुपये

मुद्रक

मित्तल प्रिंटर्स

दिल्ली 110032

विषय-सूची

१	मेवा परमोधम	७
२	प्रारम्भिक काल	१०
३	अप्पर और जन धर्म	१३
४	अप्पर का व्यवहार	१५
५	प्रायश्चित्त	२०
६	अप्पर के भगवान	२५
७	अप्पर का ध्यय	३०
८	प्रथम तीर्थयात्रा	३२
९	पिता पुत्र का मिलन	३७
१०	तिरुवडि दीक्षा	४१
११	अप्पर और उनके प्रशसक	४६
१२	पिता-पुत्र का पुनर्मिलन	५२
१३	एक लम्बी यात्रा	६२
१४	कलाश की ओर	६७
१५	दक्षिण कैलाश	७७
१६	बिनम्र ही शक्तिशाली होते हैं	८३
१७	उपसंहार	८७
१८	अप्पर का संदेश	९०
१९	नालवारा में अप्पर का स्थान	९४

सेवा परमोधम

सातवी शताब्दी में तमिलनाडु में एक सत हुआ था, जिनके जीवन का आदर्श था—मेवा परमाधम । उन्होंने एक गीत में लिखा है

मेरा कर्तव्य है

सेवा करना

और सन्तुष्ट रहना ।

और वास्तविकता तो यह है कि उन्होंने इस पहलेवाली पवित्र में अपने इस कर्तव्य के प्रति एक शत ग्यो है । १० गीत में एक स्थान पर उन्होंने लिखा है

दूसरी ओर

तुम्हारा है कर्तव्य

कि तुम रखो

बाध कर मुझे ।

उपरोक्त दोनों पवित्रों द्वारा उन्होंने सृष्टि के सजनहार के प्रति अपने और अपने प्रति उन विश्व सजनहार के कर्तव्य की सम्पूर्ण व्याख्या की है ।

उनका माता पिता में उनका नाम रखा था— मरुचनी की बयार और स्वयं प्रभु ने उन्हें तिरु नावुकुपरसर की पदवी प्रदान की थी । उनके मूल नाम को ता लाग बहुत पहले ही भूल गया । उनका दूसरा नाम भी आज केवल विद्याधिया के बीच में ही प्रचलित है किन्तु उनका एक और नाम है जो उन्हें एक 6 8 वर्ष के बालक से प्राप्त हुआ था । तब तिरु नावुकुपरसर पहली बार उस बालक से मिले व चालीस वर्ष या उससे भी अधिक आयु के थे । इस वरिष्ठ व्यक्ति का देखकर बालक ने अत्यन्त मन्द और सहज भाव से उन्हें धपपरे ! ओ पापा !' (अर्थात् ह पिता !) कहकर सम्बोधन किया । और यही वह नाम है जिससे तमिलनाडु का हर व्यक्ति उन्हें जानता है । यह एक विद्वान्ना ही है कि 'अप्यर (पिता) की अपनी कोई मत्तान नहीं किन्तु जिस प्रकार भगवान् का समस्त ससार परम पिता' कहता है उसी प्रकार समस्त ससार उन्हें भी 'अप्यर' (पिता) या पापा के नाम में सम्बोधित करता है ।

अप्यर सम्भवतः ६१० ई० से ६६१ ई० तक अर्थात् लगभग इक्यासी वर्ष की आयु तक जावित रहे । हम यह कह सकते हैं कि वे लगभग पूरी सातवी शताब्दी में विद्यमान रहे । एक प्रकार से हम सातवी शताब्दी को 'अप्यर शताब्दी' भी

कह सकते हैं। तमिलनाडु के लागा व सामाजिक और धार्मिक जीवन पर—विशेष पर मरुआई से मद्रास और उसके भी आगे तक के जनजीवन पर उनका बहुत ही गहरा प्रभाव था। वह बालक जिसने उन्नीस पापा कहकर सम्बोधित किया था, उनका नाम था—तिरु नान सम्मन्धर। अप्पर का जिनके वप का जीवनदान मिला था निरु नान सम्मन्धर के हिस्से में कबल उमका पाँचवाँ जन्म ही आ पाया था। उसने जब अप्पर के जीवन में प्रवेश किया, तब अप्पर लगभग चालीस वप के थे। फिर भी तमिल भाषा में रच गये भक्ति साहित्य में जिन्हें तिरुमुर कहते हैं तिरु नान सम्मन्धर की कृतियाँ के तान ग्रंथ अप्पर की कृतियाँ के तीन ग्रंथों में पहली रखी जा सकती है। हम कह सकते हैं कि तिरु नान सम्मन्धर का जीवन काल ६४२ ई० में ६७८ ई० तक था। उनकी कृतियाँ का अप्पर की कृतियाँ से पहले स्थान पर का कारण यह है कि जिस समय उन्होंने अपना पहला गीत रचा था वह बालक तीन वप के थे। यह समय अप्पर में मिलने के लगभग पाँच वप पूर्व का था और अप्पर का प्रथम रचना में लगभग तीन या चार वप पहले का। इन दोनों के बीच का जीवन भी तान बान में परस्पर रचा गुथा है। अपने जीवन काल में एक दूसरे में वह बालक ही बार मिल और इस प्रकार से उनकी एक भेट से दूसरी भेट तक के समय के अनुसार हम अप्पर के जीवन काल का कई भागों में विभक्त कर सकते हैं।

हम कह सकते हैं कि अप्पर का बालकाल उनके जीवन के चालीसवें वप से ही आरम्भ हुआ था किसी भी ऋणा में उससे पहले नहीं। अपने जावकाल के अंतिम चालीस वर्षों में वह भगवान् शिव के लगभग १२५ आराधना स्थलों पर पैदल ही गये जो हजारों लाखा मीलों तक फैले हुए हैं। इसके अतिरिक्त तमिलनाडु के चार प्रदेशों में वे भी एक व, जो तिरुक्कावरनम के आराधना स्थल पर प्रभु का अपनी सेवा अपना पूजा अर्पित करने गये थे। यह दो स्थान पश्चिमी सागर तट पर मगलौर और माम गाथा के बीच में स्थित हैं। आज यह भाग उत्तरी कनाटक के हिस्से में आता है। किन्तु यह उस छोटे दक्खिन में जलगे ही हैं जो पुदुकोट्टै के सीमा तट पर बसा है। अप्पर उससे भी आगे—हिमालय की तराई तक—गए थे क्योंकि वे उस कनाश शिखर पर जाना चाहते थे, जहाँ भगवान् शिव का निवास है किन्तु उन्हें भगवान् का आदेश प्राप्त हुआ कि वे यहाँ न जाकर दक्षिण भारत में तिरुक्कवार जाएँ। इस दिशा में बालक तमिलनाडु की सतत काल आम्भे गये उनसे आगे निकला, जो भगवान् शिव के निवास स्थान कलाश तक पहुँच गई थी और जिन्हें स्वयं भगवान् ने जो माला पहनकर सम्बोधित किया था और इस प्रकार उन्हें एक अपूर्व गौरव प्रदान किया था। उन्हें भी आदेश हुआ था कि वे पुनः दक्षिण दिशा की ओर लौट जाएँ और तिरुवालाकाट में जाकर बस जाएँ।

अप्पर ने कम-से कम तीन सौ बारह दशको मे अपने गीता की रचना की थी जिसमे कुल मिलाकर ३०६८ पद है। ये सभी पद भक्तिभाव से जोतप्राप्त और माधुय से भरपूर हैं। फिर भी इससे पहले कि व अपने तीन हजार से भी अधिक गीता के प्रथम पद की रचना करत, उह अपने जीवनकाल का लगभग आधा भाग दुःख और कष्टा के बीच बिताना पडा था।

प्रारम्भिक काल

अप्पर का जन्म मुनैपाठी नामक ताल्लुक के तिरुवामूर गाँव में हुआ था। इस ताल्लुक का हम एक जिला भी कह सकते हैं क्योंकि यह वर्तमान तमिलनाडु के दक्षिणी अर्कोट जिले के समान ही है। उनके माता पिता मादिनीयार युगपन्वार वरलालर जाति की ही उपजाति कुरुक्कियार के वंशज थे। वरलालर शब्द का सामान्य अर्थ होता है खेतिहर किन्तु तिरुवल्लुर न अपने अध्याय धन की 'यासिता' में इसना प्रयोग जिस अर्थ में किया है उसका एक विशेष महत्त्व है। उन्होंने नियम बनाया कि

यह समस्त धनराशि जिसे सुयोग्य व्यक्ति बहुत महनत द्वारा अर्जित करते हैं मानवता की सेवा में प्रयुक्त हान के लिए ही हाती है।" तिङ्कुरन—२१२

सदा शब्द का तमिल पर्याय है—'वला'म'—अर्थात् सेवा करना। अप्पर ने ठीक ही कहा है (इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं)

वक्तव्य है मेरा सेवा करना
और
स तुष्ट रहना'

अप्पर की बड़ी बहिन तिलक्वतीयार की मगाई किसी सनापति से हुई थी कि तु विवाह से पूर्व ही अप्पर के माता पिता दाना बच्चा को अनाथ छोड़कर स्वयं सिंघार गये। उस समय तिलक्वतीयार की जायु मुश्किल में चौदह बप की रही होगी। इन बच्चा पर एक के बाद एक विपत्ति और दुःख के पहाड़ टूटने लगे—लडाई के मदान में तिलक्वतीयार के भावी पति को भी वीर गति प्राप्त हो गयी। उसने घोषणा कर दी कि जब वह भी अपने जीवन का अंत कर दगी—सम्भवतः वह पारम्परिक रूप में अपने पति की चिता के साथ जलकर सती जाना चाहती थी। अप्पर उस समय आठ दस बप के बालक ही थे। वे रोते हुए अपनी बहिन के चरणों पर गिर पड़े और कहने लगे अब मेरा क्या होगा? इस प्रकार उन्होंने अपनी बहिन के हृदय में जीवित रहने का मात्र फूका। उनकी बहिन ने अपने छोटे भाई की देखभाल और पालन पोषण इतने प्यार और योग्यता से किया कि संभवतः उनके माता पिता भी उनका इससे अधिक लाड प्यार न कर पाते और न ही उन्हें इससे अधिक योग्य बना पाते। बड़े होकर उन्होंने अपनी जायदाद का, जो संभवतः

काफी बड़ी थी भार सँभाला और एक योग्य व्यक्ति की भाँति तिरुवल्लुवर के बनाय हुए नियमों के अनुसार ही उन्होंने अपने कर्तव्यों का पालन किया। तमिलनाडु के सत्ता का चरित्र लिखनेवाले सेबिकपार ने उनके कार्यों का वर्णन इस प्रकार किया है

सामारिक जीवन की
 क्षणभंगुरता को पहचानकर
 उन्होंने उठाये समस्त सद्भाव
 मुक्त हस्त हो,
 किये अनर्को दान,
 वक्ति दान ।
 ही उठे द्रवित जब
 प्रेम ने,
 महानुभूति में
 तो उ होन खुलवा दिए अनेक
 भोजन के भण्डार
 और जलागार
 और
 समार ने भी उ हे दिया,
 खूब दिया,
 यश और मान सम्मान'

तिरुनावुकु अरसर पद—३५*

“जगल उन्होंने लगवाए
 तालाव भी खुदवाये
 अपना वत्तव्य निवाहने को रहे
 सदव तत्पर ।
 जिसने जब भी माँगी कोई मदद
 खुश होकर उन्होंने
 उने वह सब कुछ दे दिया,
 जिसकी उसे जरूरत थी ।
 जो भी आया उनके द्वार
 पाया उसने उनसे अकथ

*तिरुनावुकुअरसर के लिए भविष्य में ति० प्रयुक्त किया जायगा ।

आदर और सत्कार ।
 विद्वानों को उहोने दिया सम्मान
 साथ ही अपनी उदारता का दान
 दिया समस्त सत्तार को ।

ति० पद—३६

उहोने नजरे घुमा तर चारों ओर देखा
 और उन्हें यह बोध हुआ
 कि ममार क्षणभंगुर है,
 उहान स्वयं में कहा,
 'मैं इस क्षणभंगुर जीवन का शिकार कभी नहीं बन गा ।'
 उनमें एक अदम्य चाह थी
 दशन का जानने की,
 साथ ही पहचानने की,
 कि दश के अन्य धर्मों के
 क्या हैं विधि विधान ।
 और इस तरह वे आकर्षित हुए
 जैन धर्म की ओर
 जिसका प्रमुख सिद्धांत है—'अहिंसा ।'

ति० पद—३६

तत्काल ही अप्पर पाटलीपुरम गए, जहां जैन मठवासियों का निवास था और
 जा समुद्रतट पर बसा हुआ था । वतमान समय में यह स्थान सम्भवतः तिरुप्पादि-
 गीपुलियूर के पास ही है जो मद्रास में तंजावुर की रेलवे लाइन पर कडलूर स्टेशन
 से तीन किलोमीटर उत्तर में बसा है । फिर वे जैन मठ में सम्मिलित हो गये ।

अप्पर के ज्ञान के बाद तिलकवतीयार ने भी गांव छोड़ दिया और उन्होंने
 तिरुवादिक्क वीरत्तानम के शिव मंदिर में शरण ले ली । जब वह दिन रात
 भगवान् की सेवा में ही अपना समय बिताने लगी ।

अप्पर और जैन धर्म

अप्पर का जन्म का प्रति आनन्द का उपगमा का सेविकार न एक विनायक प्रचार का व्यवहार किया है। उन्होंने कहा है। 'हमारे प्रभु न (अप्पर पर) कृपा नहीं की। मणिकार द्वारा रचित मन्त्र चरित गाथा में अप्पर का विघर्षो कहा गया है क्योंकि य जैन धर्म का अध्ययन करना मैं मन्त्र में पल गये थे किन्तु जब उन्होंने दावारा जैन धर्म का अपनाया तो मणिकार ने कहा कि ये एर दुष्टी भी परचात्ताप की अग्नि में जलन हुए व्यक्ति थे।

अप्पर किंग उद्यम में जैन धर्म के प्रति आर्षित हुए यह जीव न कहा नहीं जा सकता किन्तु अनुमान किया जाता है कि जब उन्होंने जैन धर्म का अपनाया उस समय उनकी आयु बीस वर्षों के कम नहीं थी। सम्भवतः उस समय उनका आयु पच्चीस वर्षों के आस पास रही है। उन्होंने उन वर्षों तक जैन धर्म का पालन किया। य उस समय एक एक तरह अपना गिर का मारे बाल नाचन रहे जब तक कि पूर्ण रूप से मज नहीं हो गया। किन्ती भी रूप में यह एक बहुत दुःखी थी अनुभव है। कहा जाता है कि जैन धर्म ग्रामका व बीस व बहुत महत्वपूर्ण पद तक जा पहुँचे और उन्हें धर्म मन्त्री (धर्म सनार) की पदवी प्रदान की गई थी। उनका गाथी मन्त्रागी तथा उस समय का पल्लव शासक नरसिंहा वमा का जिन महत्प्रपत्नव १६०० ई० में लेकर ६३० ई० तक शासन किया। अप्पर का जन्म दाना की शासन के शासन काल का देखा था। जिस समय अप्पर जीव का जन्म जैन धर्म के चरम गिर पर थे, उन्हें अचानक इतना भयकर रोग हुआ कि जैन मठ तथा राजा के अच्छे म-अच्छे विनायक और तांत्रिक भी उन्हें ठीक नहीं कर सके और हार गये। मैं जान बूझकर उन सभी को तांत्रिक नाम - मन्त्राग्र पर रहा हूँ क्योंकि वे दवाइयाँ भी देते थे मन्त्र भी पढ़ते थे और मन्त्राग्र भी करते थे। जग जस के मन्त्र पढ़ते थे उदरभूल बचना जन्म का मन्त्र मन्त्र पीड़ित दुष्टी अप्पर को अपनी बहन की माता आयी और दुष्टी उस चरचा बुलवा लिया। निलकवतायार अप्पर की प्रभुता का मन्त्र मन्त्र, मन्त्र मन्त्र दुष्टी थी, क्योंकि उन्हें यह विश्वास था कि अप्पर मन्त्र मन्त्र का उपाय पायडी हो गये हैं। उन्होंने उनका पास जान मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र यह भी कहना भेजा कि अप्पर स्वयं ही मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र यही हुआ। आधी रात के समय सिर मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र

बहन के पास जा पहुँचे। उस अघेरी रात में उनके कदम लटखटा रहे थे और उन्हें कोई राह दिखानेवाला न था। किसी प्रकार सेता चलिहाना गड्ढा, नाला का पार करत हुए अत में भोर होत होते वे बहन के द्वार पर जा पडे हुए। व बहन के चरणा में गिर पडे और उन्हें अपन दुख की गाथा सुनाने लग।

तिलकवतीयार न प्यार से अपन पाँवा पर झुक भाई को ऊपर उठाया अपन हाथ में पवित्र भस्म उनका मस्तक पर लगायी और धीरे धीरे उनका हाथ पकडकर भगवान शिव का मन्दिर में ले गयी। यह मन्दिर तिरुवात्तिकै वीरत्तानम में है।

अप्पर का व्यवहार

आश्चर्य की बात है कि अप्पर के जैनधर्म अपनाते आर उनका अपना बहाने के पास दुखी होकर लौटने के विषय में सेविक्कार ने इन वाक्या का प्रयोग किया था 'हमारे प्रभु न (उम पर) कृपा नहीं की' और 'अब भगवान की दया उस दुवारा प्राप्त हुई है' क्योंकि सेविक्कार की मानिककवाचकर की दो भविष्य वाणिया के विषय में अवश्य मालूम रहा होगा। मानिककवाचकर न कहा था

उस (प्रभु) के चरण पवित्र हो जा निर्मित मात्र के लिए भी मर मन
न दूर नहीं हात है और 'प्रभु! मुझसे और मर मन से दूर होने की
आपकी जो भर भी इच्छा नहीं है।'

'भगवान कभी मनुष्य का घोषा नहीं देते यह तो केवल हठी मनुष्य ही है, जो भगवान से दूर चला जाता है। इस सन्दर्भ में मानिककवाचकर न यह स्वीकार किया है कि जब प्रभु न उनकी रक्षा करने के लिए उनकी आर अपने पवित्र हाथ बढ़ाये थे स्वयं वही उनसे हाथ काटकर उनसे दूर हो गये थे और सम्भवत उहान प्रभु का हँसते भी उडायी था। हम मानिककवाचकर के इन सभी कथना का याद रखना चाहिए। जब अप्पर को उनकी बहन प्रभु के सम्मुख एक अपराधी की भाँति ले गयी थी अप्पर न केवल स्वयं का निर्दोष बताया था, उ होने यहाँ तक कहा था कि उनका एक सूठे मुकदमे में फँसा दिया गया है। उनका एक गीत में उनका भलापन और उदरशूल की भयकर पीडा झलकती है

यह यातनादायी उदरशूल
जा मृत्यु की वेदना से भी अधिक
भयकर है,
क्यों दूर नहीं करने ?
मुझे नहीं मालूम
कि मरा दोष क्या है
हूँ प्रभु !
इस दुख को दूर करो !
मदा और सवदा,
दिन और रात
वरावर, तगातार,

मेन तुम्हारे चरणों की पूजा की है ।
 अब तक इस रोग का निदान नहीं हुआ
 इस उदरशूल ने
 मेरी आँतों को छेद डाला है
 मैं भयकर
 पीटा में दुहरा हो हो जाता हूँ
 प्रभु ! मैं तुम्हारा दास
 अब और नहीं
 सह सकता

हे मेरे
 केदिलम के किनारे
 आदिरुनई के वीरात्तनम में
 बसनेवाले प्रभु !
 अब और नहीं सहा जाता ।

तिरुमुर्* प्र-य ४ दशक १ पद १

यह उनका प्रथम दशक का पहला पद है । अगले पदा में उन्होंने घोषणा की

मैं अपने हृदय को
 तुम्हारा निवास स्थान बनाया है ।

मुझे उम एक पल का
 भी स्मरण नहीं
 जब मेरा मन
 तुमसे तुम्हारे ध्यान से
 दूर रहा हो ।

तुम्हारी ऐसी निष्ठुरता
 ता कभी दया ही नहीं थी ।
 यहाँ मैं जी रहा हूँ
 केवल एक ही आम के सहारे
 जि मैं दास बनूँ,
 केवल तुम्हारा ।
 किन्तु यह उदरशूल

*तिरु मुर् ४ तिरु माय ११० म० का प्रथम द्विवा भावेगा ।

मुख जीवित रहते ही दे रहा है मरणातुल्य कष्ट प्रभु ।
दया करो मुझ पर,
और इससे मुक्ति दो ।

मैं,
युगो मे तुम्हारा भक्त हूँ
किंतु,
इस वान मे अनजान
तुम रष्ट हो मुझमे
और इस मरणातक पीडा का
भागी बना रहे हो ।
तालाब के किनारे खडे
उन चौकीदारो से असावधान ।
जिन्होने मुझमे कहा,
प्रेरित किया—
'इस तालाब मे कूद पटो,
तैरो और
इसकी गहराई का अनुमान करो'—
मैं बूद पडा हूँ इस जलाशय मे ।
और अब मुझे वह
किनारा
दिखायी नही देता
जहाँ मेरे पैर टिक सके ।

ऐसे शब्द
मैंने पहले कभी नही सुते थे ।
मुझे याद नही कि
कब मैं भूल गया था
जल, फूल और धूप से
तुम्हारी पूजा-अचना करना

मुझे ऐसे किसी अवसर की
याद नही
जब मैंन तमिल मे
तुम्हार लिए मधुर गीत नही गाये ।”

अच्छे और बुरे
दिनों में
मुझे याद नहीं कि
कभी मैं तुम्हें भुला बैठा होऊँ ।

अपनी जुवान से
कब मने तुम्हारा नाम नहीं लिया,
मुझे याद नहीं ।

इस प्रकार इन शब्दों के माध्यम में भगवान् क उस सर्वोच्च 'यायालय' में जा
दया का सर्वोत्तम स्रोत है उद्दान स्वयं को निर्दोष सिद्ध करने का प्रयास किया ।
इसमें हम क्या समझ सकते हैं ? अपन हृदय का बार बार टटानने पर, और इस
समस्या पर बार बार विचार करने पर मैं इसी निश्चय पर पहुँचा हूँ कि पिछली
तेरह शताब्दियाँ से तमिलनाडु में अप्पर क विषय में जा यह कहा जाता रहा है
वे विधर्मों थे—यह एक निराधार आशय है सूठा दोष है ।

इस सद्बोध में मुझे बपतिस्मा (नामकरण) करने वान जान और कुमारिल
भट्टर का ध्यान जाता है । जिस प्रकार जान प्रभु जीसस के अग्रवर्ती थे ठीक उसी
प्रकार अप्पर तिरु ज्ञान सम्प्रदाय क अग्रवर्ती थे । मेरे विचार में अप्पर भी उसी
तरह जैन धर्म में प्रविष्ट हुए थे, जैसे कुमारिल भट्ट बौद्ध आश्रम में गये थे ।
दोनों का लक्ष्य एक ही था उस धर्म विशेष के रहस्या का अध्ययन करना । अप्पर
जैन धर्म क पक्के अनुयायी कभी नहीं बन । वह शब्द धर्म के विरोधी भी नहीं थे ।
उद्दान जन धर्म को कुछ इस प्रकार अपनाया था जिस प्रकार आज के युग में
कोई गुप्तचर शत्रु क सर्वोच्च सैनिक शिविर में घुसपट कर लेता है । सक्किजार
के अनुसार उदरशूल उनके लिए शब्दधर्म का निराध करने का एक दण्ड था किंतु
मेरे विचार में यह केवल गुरु और उनके द्वारा दी गई शिक्षा का साथ विश्वासघात
करने का फल था । व जन गुरु थे इसमें कोई फर्क नहीं पड़ता । यह एक कठोर
नियम है । कुमारिल भट्टर क जीवन की एक घटना में इस नियम की साधकता
सिद्ध होती है । वह गले तक भूस के ढेर में जा छिपे थे और तब उस ढेर में नाच
स अग्नि प्रज्वलित कर दी गयी थी । जम जम अग्नि और लपटें ऊपर की ओर
उठने लगीं कुमारिल भट्टर ने अपने शिष्यों का बताया कि उद्दान बौद्ध धर्म से क्या
शिक्षा ग्रहण की थी और जिन कारणों में अग्नि प्रज्वलाय बौद्ध धर्म क खिलाफ
धर्मयुद्ध करने में सफल हुए थे । अप्पर का उदरशूल क रूप में दण्ड मिला था,
क्योंकि उद्दान अपने गुरु के साथ विश्वासघात किया था भले ही उनका गुरु जन था ।

जब तक हम उनका उस भयंकर उदरशूल क विषय में यह धारणा लेकर नहीं
चलेंगे उनका पहना ही गीत जो उद्दान बंदिताम नदा क तट पर आदिकई द्वारा
सुनने में भगवान् शिव क मंदिर में गाया था, आदम्बर क साथ साथ सूठे गवाही

ना सवम बडा उदाहरण सावित हागा ।

इसक अनिश्चय यदि उनम भगवान शिव के प्रति अमीम आस्था न हाती, ता व बार बार पल्लव राजाआ द्वारा बुलान के लिए भेजे गए दूतो का विरोध न कर पात दह तो बरल एक खोखली गीदड भभवी ही होती कयाकि उहात राजदूता स कहा था

“हम मिसी के अधीन नहा,
हम भय नही मृत्यु का,
नरक म यन्त्रणा हम नही भोगगे,
उरग भी नही हम ।
प्रमन्न रहगे हम,
रागो का हमस नही ह परिचय,
झुकगे नही हम
परम आनंद ही हमारा धन है,
दुख ता कही नही है, हमार लिए ।
हम अनुद्धरणीय दास वन—
उम विशिष्ट शरर क
जो नही ह, मिसी के भी अधीन
हम वों मेवरु
केवल उस राजा के
जिमके जानो मे है असली
शत्रो की एक लडी
हम उनम गुलाव जैमे चरणद्वय
को शरण म आ पहुँचे है
जि ह देखकर
नाता ह कि
उह अभी-अभी तोडा गया है
डान मे ।

ति० मु०, ग्रंथ ४, द० ६८ पद १

इसक अनिश्चय अप्पर न भगवान शिव क दरवार म अपन का निर्दोष ठरान के लिए जा पहला ही गीत गया था, उस मुनकर उ हान अप्पर को 'नावुकुअरमर'—की उपाधि प्रदान की थी । यह बात एकम निराधार सिद्ध हा जाता है यदि अप्पर का निर्दोष न समझा जाय । उह क्षमादान करना समय म आता है किंतु उस सर्वोच्च यायाधीश द्वारा एत अपराधी को जिसपर फौजदारी का सजत बडा आरोप लगा हो पदवी प्रदान करना समझ स दर की बात है ।

इसका शीघ्र ही प्रतिवार हुआ । जोरसभी नियमाक अनुमार यहा मही प्रतिवार था कि विश्वासघातिया को भयकर यातनाएँ सहनी पडें ।

प्रायश्चित्त

पल्लव महाराज के मंत्रिणा न अप्पर को गिरफ्तार कर लिया और राजा के सामन ना छड़ा किया। यह राजा सम्भवतः नरमिह्या वमा प्रथम ५। राजा न जन घम के बडे उडे पुआरिया म सलाह ली। उहाने कहा कि अप्पर का चून के पत्थरा मे दवा कर उम टेर म आग लगा दनी चाहिए। और ऐसा ही किया गया। जलत हुए चून के परथरा के ढेर म बडे अप्पर भगवान शिव के ध्यान म मग्न हो गय और गान लग।

वीणा के दोपरहित सगीत
 और दमकने हुए चन्द्र के समान,
 दक्षिण दिशा में आती हुई मन्द वयार के समान
 ग्रीष्म ऋतु में आते हुए शोको के समान,
 जलाशय के चारों ओर
 मधुमक्खियों की गुनगुन के समान,
 मेरे परमपिता का सुन्दर आश्रम है
 और हैं
 अनादि भगवान के दो चरण कमल।

ति० मु० प्र० ४, दशक १ पद १

सात दिन बाद जब कोठरी खोली गयी तो पाया गया कि अप्पर सही-सलामत थे। जब राजा के धार्मिक सलाहकारों ने अप्पर को चूने के ढेर पर से इस प्रकार उठते देखा जन के अभी स्नान करके जाये हो तो वे आश्चर्यचकित रह गये। यही दशा राजा की हुई। उमन अपन मंत्रियों से पूछा कि 'अब क्या किया जाय?' उहाने कहा कि अप्पर का विष दे देना चाहिए। और ऐसा ही किया गया। तब अप्पर ने यह कहत हुए कि यह विष भी भगवान के भक्तों के लिए फलदायी जायगा विषपान कर लिया। ठीक ऐसा ही हुआ। जब मुरो और मुरो ने मिल कर अमृत पान के लिए औरसागर का मथन किया था और उसमें से फल के स्थान पर विष निकला था तो क्या स्वयं भगवान शिव ने हाथ बटाकर वह विष नहीं पिया था? इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि भगवान के सच्चे भक्तों के लिए विष अमृत में बदल जाता है।

जब अप्पर को उस विपपान क बाद भी कुछ नहीं हुआ, तो राजा और उसके सलाहकार गग रह गए ।

एक बार फिर राजा न उनम सलाह मांगी । इस बार उन्होंने कहा कि अप्पर को पागल हाथी के पैरों तने कुचलवा देना चाहिए । यही किया गया । अप्पर गाने लगे

भभूत जैसी श्वेत भस्म और चन्दन सजा है
जिसने माथे पर, सुशोभित है
शुभ्र चन्द्र
जिसके शीश पर
वही छिपने के लिए एक अनमोल वस्त्र है,
और उनकी देह ह
एक शाश्वत मूंगा ।
धम, वह प्रमिद्ध उग्र वृषभ—
जिनका वाहन ह
सप जिसने चौड़े सीने पर ऐसे पड़े ह
जैसे गल-माल,
उसी की है कलकल करती केदिलम नामक सरिता ।
वही अद्वितीय पुरुष है हमारा सुरक्षक
कुछ नहीं है ऐसा, जिसका भय हो हमें
डिगा नहीं सकती कोई भी
भयानक वस्तु अब हमें ।

ति० मु०, अ० ४, दशक २, पद १

पागल हाथी न अप्पर के चरणों में बैठकर उन्हें प्रणाम किया और फिर अपनी सूंड उठाकर राजा उमक सलाहकारों तथा वहाँ पर एकत्र मयासिया की ओर घमा, ता चहा भगदत्त मच गयी ।

अप्पर का मार्ग के प्रयत्ना में असफल होने पर, इस डर से कि अब यदि उन्होंने अप्पर का नाश नहीं किया, तो उन पर सकट का पहाड़ टूट पड़ेगा उन्होंने राजा से एक बार फिर निराश होकर कहा कि जयता अंतिम उपाय यही है कि अप्पर का एक पत्थर में बाध कर समुद्र में फेंक देना चाहिए । और फिर ऐसा ही किया गया ।

जपन उद्दाम माहस से अविचलित, भगवान् शिव की आस्था में अग्नि अप्पर इस बार नम शिवाय् इस रहस्यमय पचाक्षर मंत्र का जाप करने लगे । आर्ति दत्त हाकर व गा उठ

ओम ।

यह एक शब्द

ओम

जो हर विपत्ति में सहायक है हमारा

जो है वशो का रक्षयिता

और जो तज पुज है,

स्वर्ग में रहनेवाले देवताओं का

यदि तुम

उमर उन पावन चरणों की करवद्ध पूजा करोगे

ता वह विश्व के कोलाहल और अशांति से छुटकारा दिला सकते हैं

जगर गले में पत्थर बाधकर भी

तुम्हें कोई ममुद्र में फँके देगा

उस समय भी

सर्वान्तम सहायक होगा वही एक

ओम नम शिवाय ।

तिमू० प्र० ४, दशक ११ पद १

और वास्तव में यही दधी और रहस्यमय पचास्र एसा संगीतमय जावजक (प्रेरक) बन गया जिसने पत्थर को उसका बाह्यस्वरूप बदल जिना ही इतना हलका फुलका बना दिया जस वह काठ का स्तम्भ हो और उस शिला से बंध हुए अप्पर समुद्र की सतह पर उतरा जाय और लहरो न जस उह अना मुलात हुए समीप वर्ती तिरप्पादिरिपुलिगूर के किनारे पर ला पहुँचाया ।

उम गाव के निवासी प्रसन्न हाकर बहा भागे भाग जाय । व हग हरा चिन्ला रह थ और एसा लग रहा था जैसे उनकी जावाज न स्वर्ग को भेद दिया हो और वह टगमगा उठा हा । अप्पर उनक साथ शिव मंदिर में गय और भगवान की प्रतिमा में मामन विभोर हाकर गान लगे

मग प्रभु

मेर, और उन सभी के

जिन्होंने मेरे साथ-साथ वही जन्म लिया,

माता—पिता,

मवस्व बन गये ।

उन्होंने प्रसन्न हो

तीनों लोक बनाये,

और वे ही,

जो दिव्य आत्माओं के सहायक हैं,

मेरे अन्तर मे सुप्रतिष्ठित हो गये
तिरुप्पादिरिपुलियूर मे भी वे हम सबके,
जो उनके दास है,
अप्रत्यक्ष रूप मे सहायक बन गये है ।

तिमु० प्र० ४, दशक ६८, पद १

तिरुप्पादिरिपुलियूर से अप्पर तिरुवादिकई वीरत्तानम चले गय । मं दिर म
प्रवश करवे व अपन उसी आराध्य क सामन छडे हा गये जिसके सामन कुछ दिन
पहले ही उ होन अपन नदोप होन की याचना की थी ।

शिव भक्ता रा वणन सेक्किपार न अपन गीत मे इस प्रकार किया है—

उनके गले मे है

रद्राक्ष की माला

और शरीर पर बन्दै,

उनका काम है

वेवल प्रभु की सेवा करना,

है दया-भाव जिनके हृदय मे और प्रेम,

जो सवगुण सम्पन्न है,

उनकी दळता का वणन

में किस प्रकार करूँ ?

‘क-३’ एक प्रकार का अधावस्त्र होता है, जिसे कमर के गिद लपटा जाता है और जिसके नीचे की बखिया पिंडलिया क निचल भाग तक पहुचती है । यह कपडा हमेशा श्वत होता ह । इन सभी तिरुसठ तमिल सत्तान जिनका जावन चरित्र सेक्किपार न लिखा ह कभी गरुआ वस्त्र नहीं पहना । सेक्किपार न अप्पर का, जब व आदिकई-वीरत्तानम् म भगवान शिव क सम्मुख छडे थे बडा सुन्दर वणन किया है । इस वणन म हम बवल एक वान और बढाती है । अप्पर उम ममय अपन हाथ म एक कुदाली लिए हुए थ, जिमकी बेट खब लम्पी थी । उ हानि इस कुदाली को इस प्रकार पकड रखा था, जिम प्रकार कोई सनिक अपन कधा पर बटूक रखता है । जहाँ जहा व जात भगवान शिव क मंदिर के आस पास और रास्ते मे जितन काँट रीर वाडिया होती, उ ह इसी कुदाला स काटते जात ।

भगवान शिव क मामन छडे होकर उ होन इस गीत के माध्यम से अपना ध्येय व्यक्त किया

वह प्रभु

जिसके गले मे

सुगन्धित कुविला के

फूलो का हार है,

वह प्रभु
 जो वीरत्तानम् के स्वामी हूँ
 वह प्रभु, जिसके पास श्वेत नदी है,
 वह प्रभु, जो चित्तकवरे सर्पों से
 सुशोभित है,
 वह प्रभु, जिसकी आराधना
 स्वयं भगवान् विष्णु करते हैं—
 वही भगवान् विष्णु, जो गरुड पर आरूढ़ होते हैं
 और जिनको स्वयं ब्रह्मा भी
 भली-भाँति नहीं जानते,
 वही प्रभु, जो आदिक्कई में हूँ
 और कितलोल करती, केदिलम नदी के तट पर हूँ—
 ओह ! मैं कितना मूख हूँ,
 कि मैंने अतीत में
 उमी प्रभु के विषय में
 असम्मानसूचक शब्द कहे थे ।

तिमु० प्र० ६, दशक ३, पद २

इस प्रकार उन्होंने अपने आराध्य से विनती की, क्योंकि स्वप्न में श्री भगवान्
 का अपमान करना उचित नहीं है । और अप्पर ने यह गुनाह उस समय किया था,
 जब वे पल्लव महाराज के दरबार में जन सयासी थे ।

इस गीत के साथ अप्पर के जीवन का एक लम्बा इतिहास आरम्भ होता है—
 यह इतिहास जो चार दशकों से कम का नहीं था, और जिसमें से कुछ समय उन्होंने
 तिरु जान सम्ब घर के साथ बिताया था ।

अप्पर के भगवान

शिव सिद्धान्त के अनुसार वेदो में सामान्य और आगम में विशेष गुण हैं। यद्यपि वेदों को पूरा आदर सम्मान दिया गया है फिर भी आगम ही शिव सिद्धान्त के समस्त दर्शन के स्रोत हैं। शिव ज्ञान बोध में ही जिस पर शैव सिद्धांत आधारित है, आगम का सार है। मानिकवाचकर के अनुसार इसकी रचना भगवान शिव ने स्वयं महेंद्र पर्वत पर जासीन होकर की थी और तदुपरान्त उन्हें अपनी सहस्रमिणी भगवती उमा का मुताया था। शिव ज्ञानवाधम के बारहवें और अंतिम सूत्र में लिखा है

‘(ज्ञान की सहायता में) उस (अज्ञान) मल को धो डाला जो तुम्हें भगवान शिव के कामल और दृढ़ चरण-कमलों से एकाकार होने से रोकता है उन भक्तों में मिश्रता करो जो सासारिक इंद्रजाल से दूर हैं और जो ज्ञान परिपूर्ण हैं, तथा उन मंदिरों की भी पूजा करो जहां वास्तव में भगवान का वास है।’

शिव सिद्धांत के अनुसार भगवान शिव स्वयं एक मंदिर हैं और उस प्रतिमा की पूजा आराधना, जो मंदिर में स्थापित है, धर्म का एक अभिन्न अंग है। यही कारण है कि तमिलनाडु में हजारों मंदिर हैं। किसी किसी एक शहर में सौ से भी अधिक मंदिर हैं।

वेदों को माननेवाले तथा ईश्वर के निराकार स्वरूप की उपासना करने वालों के लिए मंदिर में पूजा आवश्यक नहीं है। वेदों के कमकाण्डों में जो त्रय (तीन) अग्नि मंत्र और पूजा, तथा सामूहिक यज्ञ (हवन) उनके दैनिक जीवन के लिए प्रस्तावित हैं पर्याप्त हैं और उन्हें किसी भी मंदिर में जाने की आवश्यकता नहीं है।

अखण्ड शैव सिद्धांतकों होने के नाते अप्पर ने कम से कम भगवान शिव के सवा सौ मंदिरों में जाकर उनकी पूजा आराधना की और उनके भजन गाये। फिर भी यह कहा जा सकता है कि उनके भगवान साकार थे, और मंदिरों में उनकी स्थापना थी। बिलयम ज्ञान जो इंग्लैण्ड में रहते थे और रहस्यवादी थे कहा है

यद्यपि भगवान सब जगह हैं फिर भी वह तुम्हारी आत्मा की गहनतम गहराई में छिपा है। स्वाभाविक चेतना के माध्यम से भगवान का

नही पाया जा सकता है और न तुम उससे एकाकार ही हो सकते हो। नही ज्ञान की आ तरिक शक्ति, इच्छा तथा स्मरण क माध्यम स ही भगवान तक पहुँचा जा सकता है कि तुम्हारा हृदय उनका निवास स्थान नहीं बन सकता। तुम्हारी कोई तो एक गहरी जड़ है जहा से ये सभी आ तरिक शक्तिया उमी प्रकार प्रस्फुटित हाती है जिस प्रकार एक बिंदु म जनक रखाएँ जयवा एक वक्ष स अनेक डालें निकलती हैं। इसी गहराई का का के द्र सचय या जात्मा का तल कहत है। इसी गहराई तुम्हारी जात्मा का मिलन जयवा चिंतन या अनतता कहत हैं, क्याकि यह इतना विराट ह कि यह कवल भगवान की अनतता स ही सतुष्ट हा सकता है।

यही जातरिक भगवान ही अप्पर के भगवान है। वे कहते है मेरे मस्तिष्क के अंतर्भाग मे 'वह' है मेरे मस्तक पर (अपने चरण रखे) 'वह' है वाणी मे 'वह' है और भक्तो के हृदय मे जो अपने अधरो से केवल उमके चरणो का ही गुणगान करते ह 'वह' है, 'वह' देवात्माओ से भी ऊँचा है, सप्त मण्डलो के पने भी 'वह' है फिर भी (ममार क) मोन मे मण्डित पवतीय धर्मों मे, 'वह' है को द्रै पुष्प ती मुग्ध मे 'वह' है वह पवता म है वह अग्नि मे ह वायु मे 'वह' है, और प्रादना के जाचल मे 'वह' ह कलाश के शिपर पर 'वह' है 'वह जो कानातिय (कानहस्ती) मे ह वही' सबदा मेरे अंतर मे वाम सरता है।

तिमु० प्र० ६ दशक ८ पद ५

अप्पर के त्रिण भगवान ही उनका मरत्य थ। उहाने लिखा है

तुम्ही हो माना, पिता तुम्ही हो,
तुम्ही हमार स्वामी हो
तुम्ही ह, म्नेटिन तासा,

और चाची भी तुम्ही हो
 तुम्ही योग्य पत्नी भी हो,
 कातिमय धन भी तुम्ही हो
 मेरे सभी साथी,
 मरा 'घर' भी तुम्ही हो ।
 व सब जिनसे मैं, सुन पाता हूँ,
 सवारो जिन पर मैं चढ़ता हूँ, तुम्ही बनाने हो,
 और मेर अतरंग सहायक बनकर
 तुम मुझ
 यही सब कुछ छोड़ने को
 वाध्य भी करते हो ।
 यह भ्रवण तुम्ही हो,
 यह अनमोल हीरा, यह मोती,
 मेरे प्रभु सब कुछ तुम्ही हो ।
 हा प्रभु,
 न दीवाहक मेरे प्रभु सब कुछ तुम्ही हो ।

तिमु० प्र० ६, दशक ६५, पद १

साधारणतया प्रत्येक हिंदू के लिये जन्म एक अभिशाप होता है और इससे
 छुटकारा पाना ही चार्जि। फिर भी अप्पर मानव जन्म को साथक मानत थे ।
 उहान लिखा है

कमान के समान भवे,
 गुलाब के समान
 अधरो पर
 पिलती हुई मुमकान
 गंगा द्वारा शीतल की हुई लखी अलके,
 मूंगे की तरह लाल देह पर
 दूध के समान श्वेत भस्म,
 और प्रभु के उठे हुए मधुर चरण,
 यदि कोई एक बार भी इनके दर्शन कर सके,
 तो इस ससार में मानव जीवन पाता
 होगा साथक ।

तिमु० ग्रंथ ४, दशक ८, पद ४

अप्पर अपने शरीर के प्रत्येक अंग से भगवान की आराधना और पूजा करना
 चाहते हैं। वह कहते हैं

ओ मेरे मस्तक !
 उस (विश्व के) स्वामी के सामने
 झुक जा,
 जो मुण्डमाला पहन कर एक-एक मुण्ड में,
 दान स्वीकारते हैं ।
 ओ मेरे मस्तक उसके सामने झुक जा ।

ओ मेरे नेत्रों !
 उसकी ओर देखो,
 जिसने,
 समुद्र मथन से निकला हुआ विषपान किया था
 वह प्रभु नटराज
 जो मदैव लय-ताल में अपनी भुजाओं को
 हिलाने हुए—नृत्य करता है
 मेरे नेत्रों !
 उसकी ओर देखो ।

ओ मेरे कण ! मदा
 भगवान शिव की वीरता के गुणगान सुनो ।
 वह हमारा
 राजा है
 उसकी दह में मूंगे के समान लाल
 लपलपाती लपटों की छवि है,
 मेरे कण ! सुनो !

मेरी नासिका ।
 उस श्मशान भूमि की सुगन्ध के
 मेरी सासा में भर दो
 जहाँ तीन नरोंवाले उमापति बसते हैं
 जो उनके बोलों के सहारे जीती है
 मेरी नासिका !
 उसकी सुगन्ध को मेरी मामों में भर दो ।

ओ मेरी वाणी ! देखो,
 तुम उस प्रभु का ही गुणगान करना

जो मदमन्त गजराज की, खाल पहनकर
 उस श्मशान भूमि में,
 जहाँ प्रेतों का वास है, नृत्य करते हैं,
 मेरी वाणी ! देखो, तुम केवल उसका ही
 गुणगान करना ।

ओ मेरे मन !
 तुम उस निमल प्रभु का ध्यान करो
 जिनकी घुघराली सुनहरी अलकें हैं
 जो बादलों से घिरे
 पवत-प्रदेश में रहते हैं
 और जो उमापति हैं ।
 मेरे मन ! तुम उस प्रभु का ध्यान करो ।

ओ मेरे हस्तद्वय !
 आपस में मिल जाओ
 और उस श्रेष्ठ प्रभु की पूजा करो
 जिनकी कमर में जहरीले सप लपटे हैं,
 उनके चरणों में विषेर दो सुगन्धित फूलों के ढेर
 ओ मेरे हस्तद्वय ! आपस में जुड़ जाओ
 और उसकी पूजा करो ।

यह शरीर, यह देह
 मेरे किस काम की है, जो सच्चे भक्त की तरह
 प्रभु के मन्दिर की परिक्रमा भी नहीं करती
 और अपने हाथों से
 प्रभु के चरणों में पुष्प भी नहीं चढ़ाती
 और प्रभु को प्रणाम भी नहीं करती ?
 तो फिर इस देह का क्या लाभ है ?

तिमु० प्र० ४, द० ६, पद १ से ८ तक

अप्पर का ध्येय

छठी शताब्दी में पल्लव राजाओं के सहयोग से जो स्वयं जन धर्म के कट्टर अनुयायी हुए थे जैन धर्म घुस फूना पड़ा। जन धर्म प्रमुख सिद्धांत 'अहिंसा' अर्थात् किसी भी जीव को तनिक भी नुकसान न पहुँचाना है लेकिन इससे अनुयायियों ने बर्बरता लागा कर धर्म परिवर्तन कराया और शक मंदिरों तक को तोड़ डाला। निर्यात सम्प्रदाय ने जो धर्मयुद्ध आरम्भ किया था उसका कारण न तो जन धर्म पर प्रतिभार न मच्च अर्थों में जनवाद के प्रति घणाघात। यह धर्मयुद्ध तो जन मठाधीशा के सिद्ध व्यपहार तथा प्रतिमाओं का ढ़ाने के विरुद्ध था।

तिरुत्तान सम्प्रदाय के पिता देश में फले इस अनाचार के कारण बहुत दुखी थे। उन्होंने भगवान से याचना की थी कि उन्हें एक ऐसा पुत्र प्राप्त हो जो सनातन धर्म के प्रति किये जानवाले इस अत्याचार को समाप्त कर उमे पुन प्रतिष्ठित कर सके। और भगवान ने उसकी प्रार्थना सुनकर हृदयाधार को ऐसा पुत्र उत्पन्न किया भी। इस बालक ने अपने जीवन के तीसरे वर्ष में ही अपना धर्म धर्म आरम्भ कर दिया। अपनी आयु के तीसरे वर्ष में जो पहला गीत इस बालक ने गाया, वह था

मूर्ख जन और वीर
जो प्रभु के वारे में
अपयश फैला रहे हैं
और उनके लिए सबथा अनुचित
भाषा का प्रयोग कर रहे हैं
इसलिए, मेरे मन का चोर
इस मन्दार में एक पागल हाथी की तरह
अवतरित हो गया है।
यह क्या रहस्य है ?
मुझे लगता है यह 'वही' प्रभु पागल है,
जो ब्रह्मपुरम् में आकर बस गया है।

तिरु० प० १, २० १, प०

जसा कि पहले कहा जा चुका है अप्पर तिरुत्तान सम्प्रदाय के पूर्ववर्ती
कर आय। अतः अप्पर का उद्देश्य था प्रायः सभा जयवा कम से कम उ

मन्दिरा म जाय, जो कावेरी नदी क उत्तरी और दक्षिणी किनारा पर बन ये। व तमिलनाडु के दूमरे हिस्सा म बन मन्दिरा म भी जाना चाहत थ, जिनम के लोगा का तिरु नान मम्बधर की भगुवानी के लिए तैयार कर सकें। जय तिरु नान-सम्बधर किमी स्थान पर लाग़ा म मिलकर आग बढ जात थ, तो अप्पर वहाँ इम आभप्राय स जात थे कि व उनक धमयुद्ध की स्थिति का और अधिग ण्ड बना सक ।

अप्पर क विरुद्ध जनधम बाला न राजा क अयक् सहायग न सवाधिक कठार अभियान चलाया था। अत यह और भी अधिक विलक्षण बात है कि अप्पर क अधिकांश गीता म जैनिया क विरुद्ध शायद ही कही निन्दा की थलक मिलती हो, और यदि एसा है भी ता उसका भाषा उद्धृत परिमार्जित ह। अप्पर न कवल दो स्थाना पर साध साध अपन विरुद्ध उस अभियाग का वणन किया है जय उह चट्टान स बांधकर समुद्र म फेंक दिया गया था। यहाँ भी जा सकन ह, वह उस कष्ट का नही है जा उह सहना पया था वरन इन पदा म भी प्रभु की दया का ही वणन है। इनम एक पद पहल हा उद्धृत किया जा चुका है। निम्नलिखित गीत म हम दूसरा सबत मिलता है

जब जैनियो ने मुझे
जल्दी जल्दी
चट्टान मे बांधकर
फेंक दिया था समुद्र म,
मेरे अधरा ने उस समय भी
नीलकुण्डिवासी प्रभु का ही नाम लिया था,
हर भरे धान के खेतों का स्मरण किया था,
और इस प्रकार
मैं वहा से बचकर आ गया था।

तिमु० प्र० ५ व० ७२, पद ७

अप्पर का अपन ध्यय यानी सनातन धम की पुन प्रतिष्ठा का ध्यान अभियोग की उन दु खदायी स्मृतिया से कही अधिक था।

प्रथम तीर्थयात्रा

अपनी बहिन और तिख्वादिक्ई बीरत्तानम म वस हुए भगवान शिव स बिदा लेकर अप्पर न तमिलनाडु के शिव मंदिरा स अपनी तीर्थयात्रा का प्रथम चरण आरम्भ किया। व पडोस व ही तिख्वानईनल्लर गये और वहाँ स आमत्तूर तिरक्कावल्लूर और अ य कई तीर्थ स्थलो से होत हुए अत म पैन्नाकाडम पहुँचे।

इस मदम म यहा यह बनाना समीचीन होगा कि मेकिरपार द्वारा दिय गय अप्पर के जीवन वत्तात स ज्ञात होता है कि अप्पर फिर कभी तिख्वादिक्ई बीरत्तानम या अपनी बहिन के पास वापस नहीं लौट। अप्पर और तिर-ज्ञान मम्बघर द्वारा की गयी कम स कम छह तीर्थ यात्राओ म एक अंतर है। अपनी हर तीर्थ यात्रा के बाद तिरु पान सम्बघर अपने जम स्थान सीवार्पा वापस लौट आते थे, कि तु अप्पर की समस्त तीर्थ यात्राएँ मिलकर एक ऐसी लम्बी यात्रा हा गयी थी, जो तिख्वादिक्ई बीरत्तानम से आरम्भ होकर तिरुप्पुगलूर म समाप्त हुई। उस समय वे इवयासी वष के थे और वे वहा के तीर्थस्थल म वसे हुए भगवान शिव मे विलीन हो गय थे और इस प्रकार उहे 'मुक्ति' मिल गयी थी।

पेनाकाडम के शिव मंदिर म, जिसे तुगानई मदम कहत है, होने खडे होकर भगवान से प्रार्थना की

तुम्हारे पवित्र
स्वर्णिम चरणों मे मुझे एक याचना करनी है
यदि अपने इस दास का,
जो तुम्हारी आराधना करता है,
जीवन वचाना तुम्हे उचित लगता है
तो
हे प्रभु ! ह पत्रिन अग्निपुज !
तुम जा
वादला मे ढरे कड दई के तुगानई मदम मे वमे हो
अपने त्रिशून द्वारा विद्युत् गति से
मुझे गोद दो,
जिसमे मेरा समस्त अपयश, मेरे सारे कलक
धुल जाये ।

तिम्० प्र० ४ द० १०६ पद १

उनकी इन याचना से प्रतीत होता है कि अपनी तीथ यात्रा के आरम्भ में ही अप्पर को कट्टु आनोचना और स्वधम त्याग के आरोपा का सामना करना पड़ा था। उनकी अपनी वहिन तथा उनके समकालीन लोग एव कई शताब्दियों के बाद सेकिरपार भी उन्हें विधर्मी ही ममज्ञत थे, यद्यपि वे विधर्मी नहीं थे। उनकी प्रार्थना करणानिधान भगवान न सुन ली। भगवान शिव के जुलूस में किसी शिव भक्त न अन्नायास ही उनके कंधे पर निशूल और शिव वाहन नादी का चिह्न गोद दिया, और इस बात का किसी का पता तक नहीं चला।

ध्यान देने की बात तो यह है कि अप्पर से पहले कभी भी किसी न इस प्रकार की अनोखी याचना से भगवान से की और न ही किसी शिव भक्त का यह अनाखा वरदान ही मिला। वास्तव में शैवा में शरीर गादवान की रीति ही नहीं है। केवल वैष्णव पुरुष और विवाहित महिलाएँ ही अपनी बाहों पर शख एव चक्र गादवाती हैं। यह गोदना जिसे समाख्यानम कहत है गुम्दारा सम्भन किया जाता है। इस-लिए अप्पर की यह प्रार्थना कि उन्हें निशूल में गोदा जाये तमिलनाडु के शैव भक्ता के इतिहास में अद्वितीय है। सम्भवत उद्धान यह प्रार्थना इसलिए की थी कि अपनी तीथयात्रा के दौरान जब भी वे किसी मंदिर में जाते थे लोग उन्हें मन्ह की दृष्टि से देखत थे।

पेनाकाडम से अप्पर आरातुरई तिरुमुतुकुडम (वह पवित्र पवत शिखर जिस अब विरुद्धाचलम कहत है) तथा अन्य स्थलो पर हात हुए तिल्लई पहुच, जिस अब चिदम्बरम के नाम से जाना जाता है।

तिल्लई जाकासलिंगम का स्थान है और हमकी अपनी विशिष्ट शोभा है यह तमिलनाडु के शिव मंदिरों में सर्वश्रेष्ठ है। यहाँ पर अप्पर ने विभोर होकर नृत्य किया और भजन गाय थे। सेकिरपार न उनकी इस अवस्था का वर्णन इन शब्दों में किया है

पूजा की मुद्रा में जुड़े थे उनके हाथ ।
मन्तक पर,
अनवरत झड़ी के समान
आख वरसा रही थी अश्रु,
मस्तिष्क और उनके ज्ञान चक्षु
असीमिन प्रेम ज्वर से पिघले जा रहे थे ।
और वह पवित्र शरीर गिरता था भूमि पर
वार-वार,
और उठता भी था वार-वार ।
सीमा नहीं थी,
अप्पर की उत्कण्ठा की, ललक की,

जब वे प्रभु के समीप पड़े थे
 और विभोर होकर
 उलझे वालों को
 लय ताल से माथ झटाने हुए नृत्य कर रहे थे,
 करने ही जा रहे थे ।

ति० पद १६७

यहाँ अप्पर १ बहुत से भक्तिमान गाय । एक गीत उद्धृत है
 जब कि
 मैं गा भी नहीं मन्ता
 एक भक्त की तरह
 हृ श्रेष्ठ है पूण योगी ।
 नव तुम्हीं वताओ,
 मैं तुम्हारी आराधना कैसे करूँ ?
 और केवल इमी पात्रण
 मुझे ठुकराओ मत
 हैं अनादि ह अनन्त प्रभु
 हे परमपिता, ह नटराज,
 तुम, तिल्लई के जान मन्दिर में
 नृत्य करते हो ।
 तुम्हारा वह अपूर्व नृत्य देखने
 आया है तुम्हारा
 मेवक ।

तिमु० प्र० ४ व० २३ पद ६

वह अद्वितीय प्रभु
 जिसका ध्यान करने ह, सार तपस्वी
 वह, जो वेदों का सार है,
 जो अणु मात्र है
 किन्तु
 जिसके समस्त गुण कभी कोई नहीं जान पाता,
 जो शहद है, दुग्ध धारा है,
 जो अलौकिक प्रकाश है
 जो देवाधिदेव है ।
 ओर जो बडा है
 ब्रह्मा और विष्णु में भी

जो समाया हूँ (अन्तरस्थ है)
 अग्नि में, वायु में, लहराते समुद्र में
 आर पवत शिखरो में !
 वह प्रभु जा रहना हूँ
 परमपत्रा—प—पुनियूर में ।
 कैम जीत गये वे मभी दिन
 उसन स्मरण के बिना ।
 नहीं
 व दिन ता हमन
 जिय तौ नहीं !

तिम्० प्र० ६, द० १, पद १

अपन न नटराज कर्ता नछप स स्वयं पा। दूर कर लिया और तिरक्कशीपालई
 की आर चत्र पड़ । यहा आन्तर एक वधू क समात रहस्यमया प्रेम परिपूण भाषा
 म उ हान एक गीत लिया। आप्रमाग्नि स विह्वल काइ नारी ही गा सन्ती है

खोलकर अपन

विद्रुम अधर

वह म्हती हूँ

'ह म्रग में रहनेवाले देवताओं के देवता !'

आर, कहती है

'प्रभु जिसके मूग के समान दमनते कन्धों पर खिंची ह,

इवेत भस्म की तीन आटी रेखाएँ !'

वह कहती हूँ,

'प्रभु जिसकी हस के समान चाल है,

जार जो घिरा हुआ है प्यासी सी मेखला स,

प्रभु, जो नवस अधिक दूर रहनवाने स भी अधिक

दूर है',

कभी सोचता हूँ,

दया उसने कभा कारिप्पालाई म रहनेवाले

उम प्रभु को देखा है,

जहा सागर

असत्य मूग विपेर जाता हे

अपने तट पर ।

तिम्० प्र० ४, द० २, पद १

तिरक्क शीपालइ की यह यात्रा की तिल्लई यात्रा का एक विष्णुम्भन ही था। अब वे फिर तिल्लई की आर वढे और साथ ही उस नटराज की आर भी गय, जिसे वे कभी भुला नहीं सक। उ होन लिखा ह

वह, जिमने अपनी
 खजूर ने ममान लम्बी
 सूट और अपने तीन उद्गमना से
 हाथियो के गुप्त स्थानो को खोज निकाला,
 वह, जो उन सभी के मस्तिष्क को
 अपना निवासस्थल बनानेवाला ह,
 जो उसका ध्यान करते ह,
 वह
 जो अनेक रूप धारण करता हे
 आर जो
 ज्ञान रूपी मन्दिर का नटराज हे,
 उस प्रभु को भूलकर
 क्या, मैं एक निमित्तमान के लिए भी
 जीवित रह सकता हूँ ?

तिमु० प्र० ५ द० २ पद १

जब वे इस प्रकार तिल्लई में अपने दिन बिता रहे थे उनका आय भक्तो ने उह एम बालक के विषय में बताया जिसको स्वयं प्रकृति अपना दूध पिलाकर पाल रही थी। यह सुनकर उनसे रहा न गया और वे तिल्लई छोड़कर तिरप्पुक्ली की आर चल पडे जा सीकापी क बगरह नामा में से एक है तथा जा तिर ज्ञान सम्बन्धर का जन्मस्थान भी है।

पिता-पुत्र का मिलन

तिरु ज्ञान-सम्प्रदाय में शिव मंदिर की तीर्थयात्रा का चौथा चरण सम्पन्न कर लिया था। उनका प्रथम चरण केवल नाममात्र का ही था क्योंकि जब उहान सीकापी में अपना पहला गीत गाया था और भगवान के जन्मस्थलवाले मंदिर में उनकी आराधना की थी, उसके पश्चात् व पड़ोस में स्थित कोलावका गये थे। वहाँ वे अपने पिता के कंधा पर चढ़कर गये थे और उम तीर्थ-स्थल में भगवान शिव की आराधना में अनेक गीत गान के बाद सीकापी लौटकर आये थे।

उनकी यात्रा का दूसरा चरण थोड़े समय के लिए था, जिसमें उहान केवल दस तीर्थस्थलों का भ्रमण किया था। अपनी यात्रा के तीसरे चरण में वे केवल तीन तीर्थस्थलों पर ही गये थे और अंत में अपनी यात्रा के चौथे चरण में उहान बीस तीर्थ स्थलों के दर्शन किये थे। जब वे सीकापी लौटकर आये थे, तो उनका यज्ञोपवीत मस्कार किया गया था। उस समय उनकी आयु सात या आठ वर्ष की रही होगी।

अप्पर लगभग तुरंत ही सीकापी जा पहुँच। सेक्कियार न अप्पर के सीकापी पहुँचन का वर्णन इस प्रकार किया है

घिरे खड़े थे
अपने भक्तों से तिरुनावुक्कुअरसर
शरीर पर पवित्र भस्म थी
और प्रभु की आराधना में जुड़ थे दोनों हाथ,
नेत्रों से स्नेहाश्रु वह रहे थे
जिनसे
देखनेवालों का मन-मस्तिष्क द्रवित हो रहा था।
वह,
जिसने सागर में एक ऐसे पत्थर का सहारा पाया,
जो समुद्र पर तैर रहा था,
वही आज तिरुप्पुकाली* आ पहुँचा है

*सीकापी का दूसरा नाम।

जो, उन सत का जन्मस्थल है
जिसने एक वरदान की तरह
तमिल में
वेदों की रचना की है।”

ति० पद १८०

जब तिरु नान सम्ब धर का पता चला कि नावुकुअरसर आ पहुँच हैं तो
उहान कहा— यह मरे पिछले पुण्य प्रतापों का ही फल है’ और अपन परिजनों
के साथ उह लिवान जा पहुँच। उहान अपन सामने एक अद्वितीय व्यक्तित्व को
देखा जिसका वणन सविस्फार न इस प्रकार किया है

मन-मानस में भरा हुआ था असीम प्यार,
अपूर्व आनन्द में वार-वार सिहर रहा था
उनका शरीर

कमर में लिपटी हुई केवल कदें
किंतु

लगता था जैसे

बहुत अधिक वस्त्र पहन रखा हो

हाथ में एक जोदण्ड भर,

और जॉखों से बहती हुई

अनवरत अश्रुधारा।

मस्तक पर पवित्र भभूनि चमक रही थी

बुछ इस प्रकार,

जैसे कि

याद दिला रही हो स्वयं भगवान शिव की।

ऐसे अप्पर उपस्थित थे

तिरु-नान सम्ब-धर के मामले।

ति० पद २७०

इधर

तिरु नान सम्ब-धर

आदर भाव से दोनों हाथ जोड़कर

अप्पर की ओर बढ़

आर उधर अप्पर

हृदय में स्नेह का मागर छिपाये आगे बढ़े

उन परिजनों के बीच से रास्ता बनाते हुए

जो तिरु नान सम्ब-धर को घेरे खड़े थे,

और तब वे गिर पड़े उनके चरणों में ।
 और उस बालक ने, जिसने अपने आर्त र स्वर से,
 आसुओं से द्रवित कर दिया था
 नदीवाहन शिव को,
 जिस प्रकार अपने चरणों में पड़े—
 उस व्यक्ति को उठाया
 अपने फूल जैसे कोमल हाथों से,
 वह शोभा तो अवर्णनीय है ।
 और उनकी ओर घूमकर
 बहुत प्यार से कहा,
 'अप्पे ! ओ पिता !
 और जिनके उत्तर में अप्पर ने कहा—
 'मैं तुम्हारा दास हूँ प्रभु ।'

ति० पद १८०

और उस दिन स यह महान व्यक्ति जन्म के समय जिसका नाम रखा गया था मरलाकिनयार और जिस उसके प्रारम्भिक गीता के लिए स्वयं भगवान शिव न नावुककरसर (बाणी का देवता) के नाम से सम्मानित किया था, तमिलनाडु में और जहाँ वही भी तमिलवासी रहते हैं, केवल "अप्पर" का नाम ही जाना जाता है । और जब तक एक भी तमिलवासी जीवित रहा—अर्थात् सृष्टि के अत तक—उम अप्पर के नाम से ही जाना जायगा । उधर अप्पर द्रवन्ना से फूल न समाय कि वे उस बालक के चरण कमला की पूजा कर सकें । उधर वह बालक प्रसन्न था कि उम अप्पर के चरणा का पूजा का अवसर मिल गया था और अतन दाना के ही मन में प्रभु की आराधना करने की रमा उमंग जागी कि वे नाव पर मवार हाकर वाड के पानी का पार करके उमर मन्दि म जा पहुँचें । वहाँ पहुँचकर भगवान के सामने खड़े हाकर तिर पान-मन्वधर न कहा,

अप्पर ! अपने प्रभु का गुणगान करो ।' बार तक अप्पर गान न

जिस दिन
 मागर ने ससार में सबको
 अपने अन्तराल में छिया लिया था,
 लोग कहने हैं,
 चार-पाच नन्ही चिटिया
 तुम्हारे चरणा का सहारा लेकर

पार उतर गयी थी ।

वह प्रभु

जो वादुमालम* मे रहता है

और जिसमे अपनी घुघराली लटो मे

शीतल चन्द्र को धारण किया है,

जहा से पावन भागीरथी पवन के साथ

धिरक-धिरक नर बहती है—

इस अमार ससार मे,

जो सागर के वाटुपाश मे लिपटा हुआ है,

एमे प्रभु का दास होने के अनिरिक्त

कोई और कुछ कर भी क्या करता है ?

तिमु० प्र० ४, द० ८२, पद १

अप्पर ने अपना बहुत समय तिरु पान सम्बन्धर के साथ बिताया और बाद में जब कावरी नदी के किनारे वस भगवान शिव के तीर्थस्थला के दर्शन की सालमा बहुत तीव्र हो उठी, तो उन्होंने उनसे विदा ले ली ।

*वादुमालम सीकारई के बारह नामों में से एक नाम ।

तिरुवाडि दीक्षा

आध्यात्मिक समारंभ प्रविष्ट होने के लिए कई प्रकार के मस्कार सम्पन्न किये जाते हैं। इन सस्कारों का दीक्षा कहते हैं। एक हाती है नयन दीक्षा—जिसमें गुरु अपने शिष्य पर अपनी कृपा दृष्टि करते हैं, दूसरी हाती है स्पर्श दीक्षा—जिसमें गुरु अपने हाथ अथवा अंग किमी अंग से अपने शिष्य के शरीर का स्पर्श करते हैं, एक और हाती है, मान दीक्षा—जिसमें गुरु अपने शिष्य का एक मंत्र सिद्धांत हैं और अंतिम है तिरुवाडि दीक्षा—जिसमें गुरु अपने शिष्य के मस्तक पर अपने चरण रखते हैं।

संत मानिकववासकर संत मुन्दर मूर्ति स्वामिखल और अप्पर के सद्भक्त में कहा जाता है कि भगवान् शिव ने स्वयं उन्हें तिरुवाडि दीक्षा प्रदान की थी। मानिकववासकर ने अपने जीवन की इस अभूतपूर्व घटना का वर्णन स्वयं किया है। उन्होंने कहा है मैं बता सकता हूँ कि किस प्रकार भगवान् शिव ने तिरुवाडि दीक्षारूप में अपना पदचिह्न मेरे मस्तक पर बनाया था। संत मुन्दरामूर्ति स्वामिखल के विषय में एक रोचक प्रसंग है। सेक्कियार ने इसका वर्णन इस प्रकार किया है

उस क्षण,
जब हरे घोड़ों के रथ पर सवार
सूर्य आकाश की पार करके,
पश्चिमी भाग में डुबने लगे थे,
वह (मुन्दरामूर्ति स्वामिखल)
तिरुवाडिकर्ण के बाहरी भाग में पहुँचे,
उस समय वह कह रहे थे,
इस महान नगर में—
जहाँ ईश्वर भक्त तिरुनावुकुरु रहते हैं,
जिनकी समस्त ससार स्तुति करता है,
ऐसे भक्त
जिनके हाथों में कोदण्ड है
और जो नदीवाही भगवान् शिव की
पूजा-अर्चना स्वयं अपने हाथों से करते हैं—
पाँव रखते हुए भी मुझे भय लगता है।

इम प्रसार कहने हुए
उहाने
नहरा ने जल द्वारा शीतल किए गए मैदाना के पार बसे
चित्त 'गानभठम्' म प्रवेश किया
उम 'पठम' म जो घिरा हुआ था
उन उपवना ने
जहा मधुमक्त्रियों की गूज ममायी हुई थी ।

वननाण्डर* जिनके हृदय म
कन-मल करती के दिनाम नदी के उत्तर म
बस हुए वीरनानम के प्रभु के प्रति
अमीम प्यार भरा था अपनी शय्या पर गये ।
उस समय उनसे प्रसन्नचित्त परिजन भी
घोर निद्रा मे डब गये ।

यह दृश्य
वीरनानम वामी प्रभु ने
चुपचाप 'मठम' म प्रवेश किया ।
वे ये एन वद्ध ब्राह्मण वेश मे
और उहोने अपने चरण-कमलो को
मुन्दरमूर्ति के पुण्य मण्डित मन्त्रक पर रखा,
जो अपनी शय्या पर निद्रामग्न होने का
दोग नर रहे थे
अररान** ने इस स्थिति को समना और बोले
ह वेदो क नाता, विप्रवर ।
तुमने मेरे मन्त्रक पर अपने पाँव रग दिये ह ।'
प्रभु न प्रत्युत्तर मे कहा—
'मुझे राह का ज्ञान नहीं था
मैं वद्ध भी हूँ,
इसी म ऐसी नूल हो गयी है ।'
तमिलनाथन* ने इस बात को मानकर

*वननाण्डर *कगनाभू भक्त भगवान शिव द्वारा मुन्दरामूर्ति स्वामिपल को दिया गया एक नाम ।

**मुन्दरामूर्ति स्वामिपल के अय प्रचरित नाम ।

अपना सिर हटाया और करवट बदल कर
फिर सो गये ।

एक बार उम वृद्ध ब्राह्मण ने अपने पाव फैलाये
और उनसे मस्तक पर रख दिये,
तो तिरुनावलूर के प्रभु ने कहा—
'आखिर बात क्या है ?

तुमन कितनी ही बार मुझे ठोकर मारी ?

तुम कौन हो भाई ?'

अपनी जटा मे गंगा को

धारण करनेवाले प्रभु ने कहा—

तुम्हे अभी तक पता नहीं चला ?'

और अतर्धान हो गये ।

सेक्कपार तडुत्तु आकोड पुराणम पद ८३ से ८७

हान ही मे उन्नीसवीं शताब्दी मे श्री रामकृष्ण परमहंस ने नरन्द्र का
तिरुवट्टि दीक्षा दी थी । यही नरन्द्र स्वामी विवकानन्द के नाम मे विश्वविख्यात
हुए । उन्होंने अपने अनुभव का वर्णन इस प्रकार किया है

'मैंने देखा कि अपने छोटे से बिल्लीने पर अबल बैठे थे । मुझे देखकर वे प्रसन्न
हुए और बहुत प्यार से उन्होंने मुझे पास बुलाकर उसी बिल्लीने पर एक आर बैठने
को कहा । किंतु क्षणभर ध्यान ही मैंने उन्हें भावातिरक से व्याकुल देखा । उनकी
दृष्टि मेरे चहर पर गड़ी हुई थी । वे धीरे से बुदबुदाय आर मरी आर बने । मैंने
सोचा, सम्भवतः वे पहले की तरह ही काइ विलक्षण बात कहेंगे । इससे पूर्व कि
मैं उन्हें रोक पाना उन हान अपना दाहिना पैर मे शरीर पर रख लिया । यह
स्वप्न अभूतपूर्व था । मेरे शरीर मे जैसे विजनी दौड़ गयी । मरी जाँखें खुला हुई
थी और मैंने देखा था कि कमरे की दीवारों कमरे का प्रत्येक वस्तु तथा मे
चक्कर काट रही है चक्कर काट रही है और शून्य मे विलीन होती जा रही हैं
समस्त त्रिश्व यहाँ तक कि मेरा स्वयं का व्यक्तित्व जमे एक साथ एक अनाम
शून्य मे गयी था—एक ऐसा व्यापक शून्य जिसमे सब कुछ समा गया था ।
मैं बहुत डर गया था । मुझे लगा मृत्यु मे सामने खड़ी है । अनायास ही मैं चीख
पड़ा— यह आप क्या कर रहे हैं ? घर पर मेरे माता पिता हैं और यह
सुनकर वे हँसने लगेंगे । उन हान मेरी छाती पर हाथ फेरकर कहा, 'ठीक है । आप
यही तक सही । एक दिन समय आने पर तुम स्वयं जान जाओगे ।' उनका मुख से
यह शब्द सुनते ही वह अदभुत घटना अदृश्य हो गयी । मैं जस एक बार फिर मैं

बन गया जोर अन्दर गटर सय पूववत् हा गया ।

उमम काइ आश्रम की बात नही कि अप्पर भी निरवधि दोगा गाना थाहत
थ ? र्मो,निए तिरुत्तान मम्पय्यर म विदा उन के बाद य अनक निव-नीयों की
यात्रा क-न हुए व तिरुवत्तिमुट्टम पहुँच । उम मतिर म जाक- र भरो हृई औया
म प्रभु की प्रापना करन तग

ह प्रभु ।

उमम पूव वि मृत्यु मुने अपना ग्राम बना ने,

अपन पावन चरणों म मेर मस्तक पर

अपन चरण निरुद्ध

अनित नर दो

रिन्तु यदि तुम छाट दामे

मन अतन भाग्य पर,

नौ यह मन्त्र तुम्हारी कीर्ति पर

एक धारा वनकर रह जायेगा

ह प्रभु ।

तुम, जिसका हाथ म प्रज्ज्वलित अग्नि ह,

वह अग्निपुज भी तुम्ही हो प्रभु,

तुम जो तिरुवत्तिमुट्टम म वसे हो ।

तिमु० प्र० ४, द० ६६, १

उनकी इस प्रापना का स्वीकार करके प्रभु न उह नेल्लोर आन का आदेश
दिया । जोर अप्पर वहाँ गये थे । मन्दिर म प्रवेश करके उहाने प्रभु को साष्टांग
दण्डवत किया । जम ही व उठन को हुए कि भगवान शिव न कहा, तथास्तु'
और उमक साथ ही उहान अप्पर के मस्तक पर अपन चरणरुमलो का मुकुट रख
दिया । अप्पर उठ खडे हुए, और प्रसन्नता से विभोर होकर गाने लगे

उहान ऐसे भक्त वनाय है,

जिनका हृदय प्रभु के ध्यान में

द्रवित होता रहता है

उहाने दुष्कर्मों को भगा दिया है

और वे दुष्कर्म, उनके आदेश के बाद

रुक नहीं सके ।

उहाने मदमस्त गजराज की चाल ओढ ली

एक चादर की तरह

और
 दूज के बाल चन्द्र को
 अपने मस्तक पर धारण किया
 और जब
 देवताओं के वशज
 उनकी चरण-धूलि लेने आये
 और निकट आकर उनको दण्डवत किया
 तो जैसे
 युगल कमलों की
 पखुरिया टिल गयी
 और उनमें स
 जलधार के समान
 मधु निकल पड़ा
 जिनमें देवताओं के
 स्वर्णमण्डित ताजों को
 सुधामय कर दिया ।
 उही यशस्वी चरणों को आज
 तुमने मेरे मस्तक पर
 रखा है,
 मेरे नल्लूरवासी प्रभु ।
 धन्य हो तुम ।

तिमु० , प्र० ४, द० १४, पद १

यहाँ यह कहा जा सकता है कि तिरु वान सम्प्रदाय को तिरुवडि दीक्षा कभी नहीं प्राप्त हुई वरन् उह ता कोई भी दीक्षा नहीं मिली । उह दीक्षा की आवश्यकता ही नहीं थी क्योंकि उनकी आत्मा तो प्रभु में विलीन हो चुकी थी, किन्तु जिनमें प्रभु का सन्देश देने के लिए ही इस पृथ्वी पर जन्म लिया था । वे अपने पूर्वजन्म के कर्मों के फलस्वरूप पदा नहीं हुए थे । वे तो ईश्वर वाटि" के थे । श्री रामकृष्ण परमहंस ऐसे व्यक्तियों का इसी नाम से पुतान्त थे ।

अप्पर और उनके प्रशमक

अप्पर अपनी शीघ्रवाणी पर फिर चल पड़ा। उद्दान कुछ अर्थ तीक्ष्णता का प्रमाण दिया कि तुझे उनका ध्यान भंगना नत्तार में लगा रहता था, और वही उद्दान जो प्रेम का जागीरा प्राप्त हुआ था उसमें स्मरण मात्र में उनका हृदय भर जाता था।

वर्तमान जा पहुँचा। नगर के लोग उद्दान पर व्याकुल शिकायतियाँ थीं—उद्दान के जन्म-आश्रय हुआ कि उसका नाम उद्दान नाम पर रखा गया था। उस व्याकुल के कारण प्रायः जन्म हुआ जिन पर अप्पर का नाम दिया हुआ था। उद्दान नाम का एक व्यक्ति स पूछा यह व्याकुल किमा बनवाया है और इसका यह नाम किसने रखा है? हम पर उद्दान को उत्तर मिला उसमें वचनित रह गया। उस रातगीर ने कहा 'अप्पुदि आदिहल ने यह व्याकुल बनवाया है और अरमु के नाम पर इसका नामकरण किया गया है। यही नहीं, आस पास की सभी गलियाँ वाला बागा—यद्यपि तो यह है कि प्रत्येक सम्भव स्थान का नाम उद्दान अप्पर के नाम पर ही रखा है।'

यह सुनकर अप्पर सोच में डूब गया कि आखिर माजरा क्या है। उद्दाने फिर पूछा वह कहाँ रहते हैं?

उद्दान उद्दाने चलाया 'जो सज्जन गल में जनक डाले यहाँ खड़े थे वे इभा नगर के बासी हैं कुछ दूर पहुँचे ही वे अपने घर गये हैं। उनका घर भी कोई दूर नहीं पास में है।'

अप्पर उस स्थान से सुरत उस व्याकुल के मालिक के घर जा पहुँचे। ब्राह्मण अप्पर आदिहल ने जन्म सुना कि प्रभु का कोई भजन उनका द्वार पर रखा है तो वे उनका अगवाणी करके सुरत बाहर जा गए। अप्पर की दृष्टि ही वे उनका चरणों में गिर पड़े। उद्दान अप्पर में जो स्वयं उस समय में जब वे उद्दान चलना सोचा था दूसरों के चरणों में चुकते जा रहे थे, कहा सबमुच मैंने वहाँ प्रकृत पुण्य काम किया है, जो अपने अनायास ही मेरे घर पर पहुँचे नर मुझे अनुगतित किया है। अतः मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ?

अप्पर ने उत्तर दिया हम सभी तिरुवायनम संप्रभु ने आराधना करके लाटे है। तब मैंने देखा कि आपने व्याकुल बनवाया है। इसका अतिरिक्त भी आपने दिया व जिनके जनक काय सम्पत्त किए हैं और करा जा रहे हैं। मैं एक

विशेष कारण से आपके पास आया हूँ। मैं जानना चाहता हूँ। कि व्याज अन्न नाम पर चलाने स्थान पर आपने किसी और के नाम पर क्यों चलाया है ?

यह सुनकर ब्राह्मण को बहुत चाट पहुँची और उन्होंने उत्तर दिया

यह आप क्या कह रहे हैं !' यह कर्त्तव्य कहते उक्त ब्राह्मण भी आ गया और वे कहने लगे— किसी और का नाम ? क्या नयी प्रकार उम मगन व्यक्ति के द्वारा मेरी बात की जाना है जिसने भगवान की भक्ति के वर पर राजा और उमर चाटकारा के पडपत्र पर विजय प्राप्त की ? वह कहत गये— क्या भगवान के उपाय इस समाज में ऐसा भी कोई व्यक्ति है जिसका उम महान आत्मा के द्वारा म मानुस नहीं है जिस लक्षण हुए समुद्र की लहरों का चक्रान्त की नाय पर प्रियाकर विनाग पहुँचा दिया था ? आप जो इन आश्चर्यमयी उता है आश्रित उम शत्रु आपने अपने मुख में निकाला भी कैसे ? और मर उता उम आप है नही ? उतिया ।'

अप्पर ने बिनम्र शब्दों में अपना परिचय देते हुए बताया कि वे ही वह व्यक्ति हैं जिसे उदरशूल की भयकर पीड़ा महती पनी थी, और जिसे उक्त घमने तक वार फिर स्त्रीकार कर दिया है। यह मुत्सु अर्पुदि जाति में उतना हाथ जोड़कर उक्त प्रणाम किया। उनके नम्र से अन्न का अर्पित द्वारा यह रही थी। गेडा में अस्पृष्ट छत्रनि निकल रहा थी। उनका गरीब समानित हा उठा था। भाषा तिरक में वे अप्पर के चरणों में गिर पड़े। प्रत्युत्तर में अप्पर ने अर्पुदि जाति में उतना साष्टांग प्रणाम किया। वे उम समय इतने प्रमत्त रहे थे जैसे उक्त अपना समस्त खोया वैभव फिर प्राप्त हुआ गया है। उतना उतने में पागला के समान कभी नाग रहे थे वे भी नाच रहे थे ता कला गा रहे थे।

उत्तम अप्पर का अपने घर आने के लिए आमन्त्रित किया और अपनी पत्नी के साथ उसे भोजन तैयार करने के लिए कहा जिसके स्वयं भगवान का अर्पित कर सकें। अर्पुदि आदिकों की पत्नी ने ऐसा ही भोजन पकाया और अपने एरलीत बेटे का चागीचे में बैठने का पना लाने का आदेश दिया जिस पर वह अप्पर का भोजन परोस सकें।

वह वाचक प्रमत्तता से भर उठा कि उसमें वह काय मीमा गया है। उक्त भाषा भाषा एक वाम में पत्नी और जप है वह एक अच्छा और परिपक्व वर काटा था हुआ कि उतने में छिपे हुए एक साँप ने उम उम लिया। बालक ने मीमा का उपाय और समझ गया कि क्या हुआ है ? दुरुम पहले कि उतने उम पर अपना अन्न दिया वह अपना काय पूरा करने के लिए पत्ता हाथ में उक्त दोहा उमने मीमा हाथ में पत्ता घमाया ही था कि वह चक्कर खाकर गिर पड़ा। मीमा उमकी गिरने में नीली पड़ती देह देखी। सपने का स्थल भी उसकी विनाश में आया। उतने बालक के शरीर का एक चटाई में लपेटा, और विछवादे के उतने की भाँति जाकर रख दिया और वापस लौट आया। उतने मुत्सु पर उतने भयकर घमने की

चिन्ता करने लगी थी। उमा अपना पति का जन्म बुनाकर सुपर त दम घटना के बाद मर गया। गी-उत्तर कहते थे अतुंगार की अतिथ्य गहरार म एव प्रकाश व्यस्त हो गए जग सुष्ठु मारा हो त ।। जपूति तातिन न अप्पर का भाजन वजन बनिए आमंत्रित किया।

अप्पर न ज एव आकर अप्पूदि आतिन उमारी पत्नी और दन्वा का निवट बुनाया और अपना हाया म उत्तर म्मता पर भम्म नगायी। मया दइ नर का यही त दपकर उताग माता पिता म उस भी बुनात का जादन दिया, जिसमे त उस भी भम्म नगायन म्मार्गीय दे गरें। माता पिता क चेनर पर क्षणभर क चित व्यप्रता दिपा दी पर उताग कहा यह नम ममय यही नहीं है।'

उत्तर नेहा पर चिन्ता और व्यप्रता लघ कर अप्पर न कहा मुझमे मच मच वताए जान गया है? मदा सच वाला का अपना कतव्य निराहत हुए हिचकिचा हट और दुःख म उताग बताया कि अनक आतिथ्य गहरार म एक विघ्न आ पडा है। फिर उताग विस्तारपूर्वक उस घटना का वणन किया।

यह जानकर कि उस दम्पति न रंगात्याग किया है अप्पर न प्रशमा भर स्वर म कहा — तुम धन्य हो! तुम्हारा व्यवहार अद्वितीय है। भला पत्नी पर और कौन उमा कर सकता है? यह कहते हुए वे उनक पीछे पीछे उस स्थान पर जा पहुँचे, जहाँ मन जानक को छिपा दिया गया था। वे भगवान शिव स उता बालक को जीवनदान दन की प्राथना करने लगे

वही एक पवन है
जिस पर हमारे विचार
ऊपर चढ़ते हैं,
एक ही वह चन्द्रमा है
जिसे वह धारण करता है,
एक ही मुटु है
उसके उन हाथो मे
जिनमे उसके भक्त
उसे प्रसाद अपण करते हैं।
और एक ही है वह नदी
जिस पर वह चढ़ता ह।
दो ही वे पद हैं
जिनकी दवता भी पूजा करते ह
दा ही वे ह—
पुष्प और प्रकृति

जिसके मुशोभित है कानो मे नारियल के
पत्तो की वालियाँ
दो ही ह उसके आकार
निराकार और माकार
और दो ही ह हिरन और गदा (जावित्री)
जो उमकी शरण मे जाते है ।

तीन ह उसके नेत्र
जिनमे से एक है उसके मस्तक पर,
तीन ही है उसके त्रिशूल की नोकें,
तीन ही होते है—वनुष, कमान और तीर,
और तीन ही थे वे त्रिकूट
जिन पर उसने प्रहार किया था ।

चार उसके मुख ह,
चार ही ज म के उद्गम—अण्ड, स्वेद, पृथ्वी और गभ
चार ही है पद—उसके बाहन के
और चार ही है वेद—
जा उसने रचे है ।

पाच हैं इमते हुए
उसके सर्पो के फल
पाच ही इन्द्रियाँ है,
जि हें वह जीतता है
पाच ही उसके तीर है
जो उसका वीर-भाजन बना था
और पाच ही ह वे वस्तुएँ^१
जिनमे वह स्नान करता है ।
छ ह ज्ञान की शाखाएँ
—जो उसने बनायी हैं,
छ ही हैं उसके पुत्र के मुख—

१ कामन्द

२ गऊ द्वारा प्रदत्त वाँव बरतुए इध दही पा गोमूत्र व गोबर

छ हा पद है उम मधुमक्षी के,
—जो उसके हाँ पर बैठती है
जोर छ ही ह स्वाद'
—जो उसके भोजन म होन ह ।

सान ह उसके द्वार
हर प्रलय के बाद बनाए गए वग'
मान ही ह वे विशाल सागर जो उमने बनाय ह
मान ही ससार ह
—जिन पर वह शामन करता है
और सात ही ह संगीत के स्वर
—जा उसन बनाये ह ।

आठ ह उसके अधिभेद्य गुण
आठ ही प्रकार के पुष्पो स उसका शृंगार होता है
आठ ही ह उसकी भुजाएँ
और आठ ही है वे मुख्य विन्दु
—जो उसने प्राप्त किये ह ।

नौ ह व निकास
—जो उसने मानव शरीर के लिए बनाये ह
नौ ही लटे हे उस जनेऊ की
जो उसके वक्ष पर सुशोभित हैं

नौ ही है उसकी घुँघराली अलको की लटे
और नौ ही है वे महाद्वीप
—जो उसने विश्व म बनाये ह ।

दस ह ने १ उमके—
पाच फना वाले सर्पों के
दस ह, जिह्वा उमके उन
पाच फनो वाले सर्पों की
और दस ही ह मस्तक'

१ लीला खट्टा नमकीन मोटा बडवा जोर खटमिट्टा

२ देवता ह सान जानवर पक्षा रग्नेयान काच पानी म रग्नेयान जन्तु जोर पेड पौधे

३ रावण

उसके जो उमके कोप-भाजन बने थे
 और जिसे तब तक कुचला गया था
 जब तक उसकी दम दतावलियाँ चूर-चूर नहीं हो गयी।
 दम ही होता है
 अध्यात्म में आत्मा के अनुभव

तिमु० प्र० ८, द० १८, पद १ से १०

इस प्रकार अप्पर ने नगवान शिव की महिमा का गुणगान किया और अंत में उनका शरीर में लिपट भजना का वचन इस प्रकार किया कि जम उनका गीत में गारुड मंत्र या वशीकरण का जिनमें वह मृत बालक जीवित हो उठगा। उसके अतिरिक्त एग में एम तंत्र गिनती गिनने से उस वशीकरण का प्रभाव का लिए पर्याप्त समय भी मिला गया।

प्रभु ने उनकी प्रायना स्वीकार कर ली और वह मृत बालक चट्टान में इस प्रकार उठ पड़ा जम बट गहरी नींद से जागा हा।

जब उन बालक को मृत्यु में हुए मृतक की शुद्धि की गयी। अप्पर का फिर भोजन करन का लिए आमंत्रित किया गया। जब भोजन परासा गया, अप्पर ने अप्पूदि आदिहल व उमके परिवार से अपना साथ भोजन करन का आग्रह किया, जिस उ हान सहाय स्वीकार किया। बहुत ही अनिच्छा में अप्पर और अप्पूदि आदिहल ने एक दूसरे में विदा ली और अप्पर फिर तिरुप्पावनम वापस चले गये।

छ हो पद है उम मधुमक्खी के,
—जो उसके हार पर बैठती है
और छ ही ह स्वाद'
—जो उसके भोजन में होते हैं ।

सात ह उसके द्वार
हर प्रलय के बाद बनाए गए वग'
मात ही ह वे विशाल सागर जो उमने बनाये हैं
सात ही ससार हैं
—जिन पर वह शासन करता ह
और सात ही ह सगीत क स्वर
—जो उसने बनाय ह ।

आठ ह उसके अविभेद्य गुण
आठ ही प्रकार के पुष्पो स उसका शृंगार होता है
आठ ही ह उसकी मुजार्ण
और आठ ही ह वे मुग्ध जिन्दु
—जो उमने प्राप्त किये ह ।

नौ ह वे निरास
—जो उमने मानव शरीर के लिए बनाये ह
नौ ही लटे ह उम जनऊ की
जो उमने बधा पर मुशोभित हैं

ना ही ह उमकी घुघराती अलकों की लट
और ना ही है वे महाद्वीप
—जो उमने विशय में बनाये हैं ।

दस ह नेत्र उमके—
पाँच फना वाले सबों के
दस ह, जिह्वा उमक उन
पाँच फनों वाले सबों की
और दस हा है भ्रमक'

१ म धा म्म नमरीन माग वदद और म्मविम

२ दवना इ ताव आनर ५६१ म्मवेपाने ५ इ म्मती म म्मवेपाने म्मू और वेद नीः

३ म्मम

उसने जो उमके कोप-भाजन बने थे
 और जिसे तब तक कुचला गया था
 जब तक उसकी दस दनावलिया चूर-चूर नहीं हो गयी।
 दम ही होत है
 अध्यात्म मे जात्मा के अनुभव

तिमु० प्र० / द० १८, पद १ से १०

इस प्रकार अप्पर ने भगवान शिव की महिमा का गुणगान किया और अंत में उनके शरीर में लिपट भुजगो का वणन इस प्रकार किया कि जैसे उनके गीत में गारुड मंत्र का वशीकरण हुआ जिससे वह मन बालक जीवित हुआ उठगा। उसके अतिरिक्त एक-एक दस तक गिनती गिनती में उस वशीकरण का पभाव के लिए पर्याप्त समय भी मिला गया।

प्रभु ने उनकी प्रार्थना स्वीकार कर ली और वह मन बालक चटाई से इस प्रकार उठ बैठा जैसे वह गहरी नींद में जागा हुआ।

जब उन बालक की मृत्यु गहुए मृतक की शुद्धि की गयी। अप्पर का फिर भोजन करने के लिए आमंत्रित किया गया। जब भाजन परासा गया अप्पर ने अप्पूदि आदिहल व उसका परिवार से अपने साथ भाजन करने का आग्रह किया, जिस उद्देश्य सहप स्वीकार किया। बहुत ही अनिच्छा से अप्पर और अप्पूदि आदिहल ने एक दूसरे में विदा ली और अप्पर फिर तिरुप्पावनम वापस चल गया।

‘पिता-पुत्र’ का पुनर्मिलन

जप्पूति आन्हिल स विन्ना लेटर अप्पर एक वार फिर अपना तीययात्रा के लिए चल पड़े। और घूमते घूमते वे तिरुवावर जा पहुँचे। यही वह स्थान था जहाँ मुदरामूर्ति स्वामिबलन वे ग्याग्रह पद लिखे थे जिन्हें तिरुतो-डात्तोई कहते हैं। इनमें उन्हात जपन से पूव हान बाल सभी तमिलनाडु के सता व नाम अपन ज्ञान के अनुमार लिखे हैं। इसी सूची में प्रेरणा और माग दशन लेकर सक्किपार ने सत चरितावली तैयार की थी। सक्किपारन तिरुवावर के प्रसिद्ध मन्दिर में कमलालयम निवासी भगवान त्यागराज के समुख छडे अप्पर का अभूतपूर्व चित्रण किया है

एक पावन देह जिसका वक्षस्थल
अश्रु वर्षा में तर था,
एक पावन मुख जिससे—
झर रहे थे,
मधुर तमिल शब्दों के गुथे हुए पुष्प हार
एक पावन मन-मस्तिष्क, जो पूणत समर्पित था
प्रभु के स्वर्णिम चरणों में
हाथों में था
एक अद्वितीय अस्त्र
और कोदण्ड
एक व्यक्तित्व, जो बना था—
इस सबसे मिलकर
वह थे अप्पर,
—जो गली-गली को कर रहे थे स्वच्छ
कि जिससे अभ्युदय हो समस्त ससार का
और विभूषित कर रहे थे प्रभु को
अपने गीत-संगीत के द्वारा।

इस प्रकार दब श्रीयान (साक्षात् जीवन मुक्ता के एकत्र होत का स्थान) में भक्तों के बीच लड़े अर्पर मग्न होकर प्रभु की स्तुति कर रहे थे

दूध जैसी धवल भस्म से,
विभूषित शरीर बाने
प्रभु के चरणों की उपासना को छोड़कर
और यह सोचकर
कि स्वयं को अच्छा बना सकता—
मैं हाथों में भिक्षा पात्र लिए भटकता रहता हूँ ।
सच्चे हृदय से,
आरुर के प्रभु की उपासना छोड़कर
जहाँ कोयल के संगीत पर
नृत्य करते हैं मयूर
जिनके घोंसले बने हैं उन उपवनो में,
जो भर हुए हैं ऐसे सुगन्धित पुष्पो से
जिन्हें कभी किसी ने तोड़ा नहीं है—
मैं एक ऐसा अधम चोर बन गया था—
जिसने पत्ते फनों को छोड़कर
एक ऐसे वाग को उजाड़ दिया,
जिसमें फल अभी अधपके ही थे ।

तिमू० प्र० ४ द० ५, पद १

बहुत अनिच्छा से तिरुवन्तूर को छोड़कर, अर्पर अपनी यात्रा पर आग बढे । कई तीर्थ स्थानों से होत हुए वे तिरुप्पुकलूर के मंदिर में स्थापित प्रभु शिव की आराधना की लालसा हृदय में सजाय उस ओर चल पडे । उसी समय तिरु ज्ञान-सम्बन्धर तिरुप्पुकलूर के बाहरी भाग में पहुँचे और मुहूर्तानर, जो सक्किपार द्वारा चर्चित तिरुसठ सता में एक थे के मठ में ठहर । पिछली बार जब अर्पर तिरु ज्ञान सम्बन्धर से मिले थे तब वे अकेले तीर्थयात्री थे ।

इस समय वे अनेक भक्तों और अनुयायियों से घिरे हुए थे । सक्किपार ने तिरु-ज्ञान सम्बन्धर के भवना की टोली और अर्पर के मितान का वणन इस प्रकार किया है

जिस समय भक्ता की टालिया
जो सिर में पाव तक पवित्र भस्म से लिपटी हुई थी,
दोना ओर से आग बढी
और एक-दूसरे में मिली
ऐसा लगा मानो चादनी-से उज्ज्वल दो सागर

—उछाह मे आगे बढे हो
ममा गये हो एक-दूसरे म
आग एकाकार हो गये हो ।

ति० पद २३३

एक दूसर का अभिवादन करन के बाद दोना सत पुगलूर म प्रविष्ट हुए ।
बालक के जिनामु प्रश्ना क उत्तर मे अप्पर न तिरुवरूर की महिमा का वणन किया
और वह मत बालक तिरुप्पुगलूर जान की प्रबल इच्छा लकर उस और चल पडा
अप्पर तिरुप्पुगलूर गय और वहाँ कुछ दिन रहकर उहाँन अडाम पडास म बन
भगवान जिव क कुछ तीथ स्थला का देखा । जब वह बालक आएर म लौटा तो
दोना आग की यात्रा प चल पडे और तिरुपुवीपिमिपल पहुच जर्ग उम समय
अकाल पडा हुआ था । मकिनपार कहत है

जब
चागे ओर ससार था
अकालग्रस्त
और लोग तडप रहे थे,
तब ऐसे दुख के समय मे
मगछाला पहनने
और हाथो मे वल्लम धारण करनेवाले प्रभु
अवतरित हुए 'बालक' और
'अरमर' के स्वरूप मे
और इस प्रकार उस प्रभु ने
जिनकी भूरी ह अलक
और जो रहते ह
तिरुविपिमिघलर्ट मे,
दया वष्टि की उन पर ।

ति० पद २४६

'हा नाकि यह मच्च ह कि तुम समय की इम दशा मे
अपन मन को दुःख नहीं होने दोगे,
फिर भी, हम तुम्हे देते है,
कि तुम भी उ ह दो,
जो तुम्हारी पूजा करत ह'
यह कहकर, प्रभु ने
रख दिया एग एक मिक्का
उन दोनों के सामने

अकाल पीड़ितों की सहायता के लिए
और हो गए अन्तर्धान—उन दोनों के स्वप्न से
जबकि उस ममय भी उनके सामने
प्रभु का स्वरूप अविच्छिन्न था ।

ति० पद २५७

तिरु ज्ञान सम्ब धर और अप्पर दोनों ने ही अपने अपने सिक्के उठा लिये और
अपने अपने शिष्या में कहा कि वे उन सिक्कों में खान पीने की चीजें खरीद लायें ।
तिरु ज्ञान सम्ब धर के शिष्या को सामान लान में रोज देर हा जाती थी । इसका
कारण पूछन पर उन्होंने कहा

हम नहीं जानते कि बात क्या है
जब हम जाते हैं
आवश्यक वस्तुएँ खरीदने
उस सिक्के से,
जो आपको उन प्रभु ने दिया है
जो आपके स्वामी हैं,
दुकानदार कहते हैं,
इस सिक्के को
चालू सिक्को में बदल कर लाओ
सिक्के बदलनेवालो मे,
जबकि वागीश्वर के दिए हुए सिक्के को,
वे ग्रहण कर लेते हैं—प्रसन्न होकर ।
यही कारण है, हमारे देर से आने का ।

सेविक्पार, तिरु ज्ञान सम्ब धर, पद ५६८

यह सुनकर,
सोचा, तिरु-ज्ञान-सम्ब धर ने
जो सिक्के भगवान शिव देते हैं हम दोनों को
उनमें से एक की
कम कीमत मिलती है हमें,
और दूसरा है अच्छा,
पूरे मूल्य का,
इसका कारण है कि दूसरा पैसा मिला है
तिरुनावुकुअरसर की अकथ भक्ति और मेवा से
अब मैं भी उस महान प्रभु की
वन्दना के गीत गाऊँगा—

जिमके मुये भी मिल मके
मविष्य मे,
पूरे मूल्य के सिक्के ।

ति० पद ५६६

और गाने लगे —
मविष्य मे मुझे भी दो प्रभु
पूरे मूल्य का सिक्का
ह मिपूलई के वासी भगवान ।
ह निमन प्रभु ।
ऐसा करने म नही होगा कोई दोष ।
ह मिपूलईवासी भगवान
तुम हमारे राजा हो, स्वामी हो,
तुम्ही वेद हो,
इस छोटे सिक्के के बदले
एक मच्च सिक्के का
दान करो प्रभु ।

ति० मु० प्र० १ व० ६२, प० १२

और प्रभु ने उनकी प्रार्थना स्वीकार कर ली । उस दिन म सम्बधर को भी
चालू सिक्का मिलन लगा ।

तिरुविपिमिपलई के प्रभु से विदा लेकर पिता' और पुत्र' पुन अपनी यात्रा
पर आगे चल पडे और तिरुमरेकाडु जिस आजकल वेत्तगण्यम कहते हैं जा
पहुँचे । यहा पर चारा वेदा द्वारा मन्दिर के पट बन्द कर दिय गय थ और आज
तक कोइ उह खोलन नही पहुँचा था । मन्दिर का प्रमुख द्वार बन्द हान के कारण
लोग बगल के रास्ते से होकर मन्दिर म जाते थे । तिरु नान सम्ब धर और अप्पर
प्रभु मुख द्वार के सामन पहुँच कर खडे हो गये । वे बगल के रास्त से मन्दिर मे
नही जाना चाहत् थ । 'पुत्र न पिता की ओर मुडकर देखा और कहा

द्वार खोलन के लिए प्रभु की प्रार्थना कीजिए । और अप्पर गान लगे
हे उमापति ।

तुम, जिसे
शैलजा की
सगीतमय वाणी बहुत प्रिय है
हे मरेकाडु के प्रभु ।
इन बन्द कपाटो को खोल दो—
कि हम तुम्हारे दर्शन कर सकें

और इन नेत्रों को सफल बनाएँ ।'

तिमू० प्र० ५ द० १०, पद १

अप्पर एत व बाद दूसरा पद गाते चले गम, किन्तु द्वार नहीं खला । तब खीज कर अप्पर न कहा

हे प्रभु ! तुमने,
अपने पाँव के जिस अँगूठे से
राक्षस का नाश किया था,
कृपा तुम्हारे मन मे किन्चित् दया नहीं है ।
तुम, जो हमारे स्वामी हो,
तुम, जो मरकाडु मे हो,
उस मरकाडु मे,
जहाँ पुनई के वृक्षों से टपन रहा है मधु
अभी, इसी समय खोल दो इन कपाटों को

उपर्युक्त पद ११

और द्वार खुल गया । पिता और पुत्र' दोनों ने अदर जाकर जी भरकर प्रभु की आराधना की । बाहर आत मगम अप्पर ने तिरु जान सम्बधर की ओर देख कर कहा

'अब तुम प्रार्थना करो कि ये कपाट बन्द हो जायें । और तिरु जान सम्बधर गाने लगे

हे वीरयोद्धा
तुम उस मरकाडु मे वसते हो—
जो ऐसे कुजों से घिरा है,
जहाँ मधु बरसता है,
जहाँ चारा बंद स्वयं तुम्हारा प्रशस्ति गान गाते ह ।
करो, मुझ पर ऐसी कृपा कि मेरी प्रार्थना से
ये कपाट स्वयं बन्द हो जायें ।

तिमू० प्र० ११ द० ३७, पद १

इसस पट्टे कि पुत्र अपने ग्यारह पदा के उस गीत का प्रथम चरण ही समाप्त कर पाना, मरि दर व कपाट एक घमाक व साथ बन्द हो गये । अप्पर ने इस दृश्य को देखा । उह ध्यान जाया कि उह अपने गीत के ग्यारहो पद गान के बाद किंचित दुखी और आधित हाकर प्रभु के दया न करने के लिए भी गीत गान पडे थे, तब, जैसे बड़ी हिचकिचाहट के साथ द्वार खुले थे । यह सोच कर उनका मन म प्रभु व प्रति शिकायत की भावना उत्पन्न हुई और जब वे सोन क लिए गय तब भी उनके मन म यही भावना थी ।

रात को उठे स्वप्न में स्वयं भगवान् शिव न देवी उमा के साथ दशन दिये और आज्ञा दी—

‘हम वाइमूर जा रह ह । हमारे पीछे पीछे वहाँ आओ ।’

और अप्पर वाइमूर गए । उनके आग आग भगवान् उमी वश म जा रह थे, जिसमें उ होन अप्पर को स्वप्न में दशा दिया था । अप्पर उनक पीछे पीछे चलत रहे किंतु किसी प्रकार वे उनमें जाग नहीं निकल सके । तब भगवान् न जम उ हैं और दर न करत हुए एक स्वप्न में दिखाया और सामन एक मंदिर की ओर नमिल किया । जल्दी जल्दी चलत हुए अप्पर प्रभु के पीछे पीछे मंदिर में प्रविष्ट हुए ।

अप्पर के प्रस्थान की बात सुनकर सम्बन्धर भी वहाँ जा पहुँच । अप्पर मंदिर में खड़े प्रार्थना कर रह थे

तुमने मुझे शारा किया, अपने पीछे पीछे बुलाया और मेरे इतने निकट होते हुए भी अब तुम कहीं अंतर्धान हो गये हो । शायद तुमने सजा दी है कि तुम्हारी इच्छा के विरुद्ध मैंने तुम्हें मंदिर के कपाट खोलने का बाध्य किया किंतु जिसने मंदिर के उन कपाटों को बंद किया वह भी मेरे ही पास खड़ा है प्रभु, उसने किस प्रकार छिप सकेगा ? और तब भगवान् ने ‘पुन’ को भी जैसे स्वप्न में दशन दिये । तिरु चान मन्व दर न उस दृश्य की ओर अप्पर का ध्यान आकर्षित किया और तब अप्पर गान लगे

मैंने सुना भक्तों को भजन गाते हुए
और, मैंने भी उस प्रभु की आराधना की,
मैंने देखी

उन भक्तों की एक लम्बी कतार ।

मैंने मुनी उन नगाटों की थपथप

जिम पर—

नाच रहे थे राक्षसों के झण्ड ।

मैंने देखा—

वे सुंदर हाथ

जो अग्निशिखा को थामे हुए थे ।

मैंने पवित्र पावनी गंगा को देखा

उसके बालों की घुँघराली लटों में

जिसके चारों ओर

सुशोभित थे अनेक नागराज

और

बान्नार पुण्डो के हार ।
 मैने देखा, उसके शीश पर।
 सारस के जन्मदाता को ।
 रोडई को भी मैंने देखा ।
 मैने देखा उसके हाथों में खप्पर,
 और इस रूप में मैंने वैयामूर के प्रभु के
 दशन किये ।

तिमु० प्र० ६, द० ७७ पद १

तिरु ज्ञान सम्ब धर और अप्पर तिरुमरैकाडु लौट आये । जिस समय वे दोनों
 अपने अपने ढंग में प्रभु की पूजा आराधना में लीन थे, मगमरकरसियार वं मुख्य
 मन्त्री कुलचिरियार तथा पाण्डियन वं राजा की महारानी द्वारा भेजे हुए दूत तिरु-
 ज्ञान सम्बधर के पास आये । उन्होंने उन्हें बताया कि किस प्रकार जन मठाधीश
 धम वं नाम पर राजा वं सुरक्षण में प्रजा पर अन्याय कर रहे हैं । और तिरु ज्ञान-
 सम्बधर ने तुरन्त पाण्डिनाडु जान का निश्चय कर लिया । उनके इस निश्चय का
 जानकर अप्पर न, जो उस समय उनके साथ ही थे, बोला

हं प्रभु !
 जन मठाधीशों के अन्याय का
 नहीं है नहीं अन्त
 मुझ तुम्हें बताना है
 कि ग्रह नक्षत्र इस समय नहीं हैं अनुकूल
 अत
 यह उचित नहीं है
 कि तुम वहाँ जान की
 तयारी करो !

सेविकियार तिरु ज्ञान सम्बधर पद ६५

पुत्र ने उत्तर दिया—
 यदि यह सच है,
 कि हम प्रभु के चरण कमलों की करते हैं पूजा,
 कुछ भी घुसा नहीं हो सकता हमारा ।
 यह कह कर
 पुकाली के उस मुखिया ने
 प्रभु के कमल जैसे सुगन्धित चरणों में मस्तक नवाया
 और सम्मिलित किया अपने

मभी परिजनो को—
 उस भजन में जो आरम्भ होता था
 इन शब्दों से—‘वेयुरु तोली’ ।

उपर्युक्त पद ६१६

वे गाने लग

वे उमापति,
 जिमकी लम्बी वाहे
 चिकनी ह, जैसे वास
 वह जो है नीलकण्ठ
 क्यों कि उसने ही किया था विषपान
 वह जो बटे प्रेम से बजाता है
 अद्वितीय वीणा
 वह
 जिनन धारण किया है अपने मस्तक पर
 निमल चन्द्रमा और गंगा की
 जब मे आ ममाया है ।
 मेर हृदय में,
 रवि चन्द्र, मंगल,
 बुध, शनि आदि ग्रह
 तथा दोना नागराज
 सभी हो गये हैं
 अतिशय दयालु मुझ पर—
 सबमुच वे अच्छे हैं, बहुत अच्छे हैं,
 अपने प्रिय भक्तों के लिए ।

तिमू० प्र० ११, २० ८५ पद १

वह प्रभु शिव
 जो धारण करते हैं गले में
 अस्त्रियों की माला—
 मूअर के दात
 और जिमके वक्ष पर झूलती है कछुए की छाल,
 वह,
 जो अपने परिजनो के साथ
 वृषभ पर सवार होकर आते हैं ।

और जो सुसज्जित है, घटूरे के फूलों के
 सुनहरे हार से
 वह जब मे मेरे हृदय में समाये हं,
 आयिल्यम
 जो नवा ग्रह है अश्विनी—प्रथम से,
 मघम जो नवौं ग्रह है पहले स्थान से,
 और जो नवाँ ग्रह है सातवे स्थान से
 वह अठारहवाँ विशाकम
 केदई
 छटा तिरुवादिरै—
 और अन्य सभी
 वरनी कार्तिनेय पूरम, चित्तिरई
 स्वादि, पूराडम पूरट्टादि
 सभी हो गये हैं
 अतिशय दयालु मुझ पर—
 क्योंकि सचमुच वे अच्छे हैं, बहुत अच्छे हैं
 समस्त शिव-भक्तों के लिए !

उपर्युक्त पद २

जब अप्पर ने देखा कि 'पुत्र' ने पाडिनाडु जाने का दृढ निश्चय कर लिया है,
 तो वे स्वयं भी साथ चलन को तत्पर हो गये। किंतु 'पुत्र' न दबता स जह रुकन
 के लिए कहा और अकेले ही पाडिनाडु चले गए। अप्पर कुछ दिन और तिरुमरैकाडु
 म रुके और तब एक बार फिर तिरुविपिमिलई वासी भगवान शिव के चरण कमलों
 की आराधना करने की इच्छा उठे वहा खीच ले गयी।

एक लम्बी यात्रा

तिरुवान्मिथूर के साथ साथ अम्परन तजावर जिले के परहालम ताट्टुवम निरम्बूर के लहर तमिलनाडु के दक्षिणी तट पर तिरुमरकाडु तक, और फिर चैयामूर के पास तिरुमरकाडु तक जा वहीं से लगभग सत्तर किलोमीटर दूर है यात्रा की थी। इसमें वाट्टुवम तिरुवान्मिथूर समवेत घर में जलम हो गये जा पाण्डियन राजा की महारानी जी के मुख्य में जा के साथ मडुरई चल गये थे।

अम्परन इस बात से बहुत परेशान थे कि वह पुत्र जिसका सम्भवतः अभी पूर्णतः किशोरावस्था में भी प्रवेश नहीं किया था प्रभु की इच्छा और आशानुसार स्वतः निश्चय कर के अकेला ही इतनी लम्बी यात्रा पर चल पड़ा है जा तमिलनाडु के दक्षिणी तट में स्थित तिरुमरकाडु में आगम्य होकर वर्तमान आश्रम प्रवेश स्थित तिरुवात्तुलुर तक फैली हुई थी। इसका अर्थ यह था कि इस यात्रा में उस तमिलनाडु के मुद्दु दक्षिणी तट पर स्थित तजावर क्षेत्र से चल कर उत्तरी अरकाट अचल से हात हुए चिंगलपट्ट जिले तक और वहीं से चलकर वर्तमान आश्रम प्रवेश तक जाना था।

कुछ एम नगर के जहाँ के शिव मंदिर के प्रति अम्परन के मन में विश्वास आकषण था। उनमें से एक था तिरुपुगलर और दूसरा था तिरुविपिमिकपई। इस यात्रा के दौरान अम्परन नाग पट्टिनम हाते हुए तिरुवात्तुलुरई गये और फिर तिरुवात्तुलुर में पधर गये। जिस समय वे वहाँ के पवित्र मंदिर में भगवान शिव का पूजन कर रहे थे उत यह बात हुआ कि यह वास्तविक प्रतिमा नहीं है। वह मंदिर तो नैन मठाधीशा द्वारा पथरी में मिट्टी पत्थरो से दबाकर गाड़ दिया गया था। उसी समय अम्परन उस समय तक भूख हडताल करने का निश्चय किया जब तक कि वह मूल प्रतिमा फिर से खाद कर निकाली नहीं जाती और वह प्रभु का पूजन नहीं कर लेने। उनकी इस प्रतिज्ञा से विकल होकर भगवान न उस प्रवेश के राजा में स्वप्न में कहा

दृष्टा एम वट्टर जन मठाधीशा द्वारा यहाँ छिपा दिये गए हैं और उट्टान राजा का वह स्थान बताते हुए मूल प्रतिमा को खादकर निकलवान का आदेश दिया।

राजा जचानक नींद में जाग उठा और दोनों हाथ जोड़कर उसने प्रभु का प्रणाम किया फिर अपने मंत्रियों को बुलाकर अपने स्वप्न का हाल सुनाया और

प्रभु का आदेश भी बताया। इसवे वाद वह अपन मंत्रिया का साथ लेकर उस स्थान पर जा पहुँचा जहाँ अप्पर बठे थे। उसने उनक चरणाम गिरकर प्रणाम किया और भगवान शिव क आदेश का पालन किया। अप्पर न वास्तविक प्रतिमा का पूजन किया जिस राजा न पथ्वी क आदर से निकलवा कर माँ इश म स्थापित करवा दिया था।

व वावेगी नती क किनार वन अनकानक तीर्थस्थला पर भी गय। कुछ समय वाद तिरुवानकका *रुम्बियूर (जिम जब तिरुवरुम्बूर कहत है) और तिरुप्पराई हात हुए व तिरुप्पगिलि जा रह थ। रास्त म व और थनावट स चूर हो गये। मक्किपार कहत ह

जव व बटे चले जा रह थे,
तो बहुत तक हुए थे
उन्ह भूख और प्यास न आ घेरा
आर उनकी शक्ति को करना लगे क्षीण।
किन्तु निभय वह वाणी प्रवर
चल ही जा रह थे।

यह देखकर
मघन सुगन्धित कुज वाले
पैगिलि मे निवास करनेवाले
त्रिनत्र प्रभु
द्रवित हो उठे—
कि व दूर कर दे
कष्ट अपने प्यारे भक्त का।
रच दिया उहाने अपनी माया से
एक कुज और एक पोखर,
आर आ गय स्वय वेश धारण कर
एक भस्ममण्डित
नाह्यण का,
कि उनका कर मुकें मागदशन।
हाथो म था उनके व्यजना से भरा बाल,
और खट थे उस राह पर
जहाँ मे होकर जानेवाले थे
व वाणी प्रवर।

तमै उटे ये व महाप्रभु, जिनक दशनों को
 तरसत है नभ म पक्षी की तरह
 उठत हुए ब्रह्मा,
 अथवा स्रय विष्णु
 जो वराह रूप म
 खोद डानत है पथ्वी का—
 कि प्रभु का शीश मुकुट
 या उनका चरण नमल ।
 मिल जाएँ

अब पहुँचे अस्पर उस जगह
 जहा प्रतीक्षारत थे
 ब्राह्मण रूप म
 स्रय वेदा क राजा
 जो वपभ पर होते है सवार,
 व खड हो गय उनके सामने और बोले,
 'तुम दूर स चले आ रह हो करते हुए पदयात्रा,
 थक चुके हो बहुत तुम,
 मैं इसी लिए ले आया हूँ—
 यह थाडा-सा आहार,
 लो, ग्रहण करो इसे
 और इस क्षरने स वह कर आते हुए
 निमल जल वाले मरोवर का जल पीया ।
 जब दूर हा जाय तुम्हारी थकान,
 चले जाना पथिक,
 चल जाना अपनी राह पर ।'
 और जैसे अस्पर समझ गए सब कुछ
 कि यह है दया,
 उनक प्रभु की ।
 उहोने तुरन्त ही कर लिया ग्रहण
 ब्राह्मण प्रदत्त उस स्वादिष्ट भोजन को
 और कहा, 'खाओ ।
 जी भर कर खाया उ होन
 तृप्त हुए

पिया निमल जल जीर पा गये छुटकारा
—अपनी धरान से ।

ति० पद २०४ ७

इस प्रकार प्रभु गदा गवदा अपन सेवका के बन जात हैं ।

उनकी ओर देखकर
जो अब फिर आनन्दित हो उठे ५
पूछा ब्राह्मण ने
'कहा जा रहे हो भाई ?'
'मैं तिरप्पैगिलि जा रहा हूँ,'
—बोले अप्पर ।
ब्राह्मण ने कहा,
'मैं भी तो जा रहा हूँ—वही ।

यह कह कर ब्राह्मणवर्णधारी प्रभु अप्पर के साथ चल पड़े । तिरप्पैगिलि पहुँच कर अचानक ही वह ब्राह्मण गायन हा गया । अप्पर ने अनुभव किया कि स्वयं भगवान नटराज ही ब्राह्मण वेश में उनके पास आये थे । उन्होंने मत्स्यगद् हाँ पर पढ़ा, मेरे प्रभु ने अपन इस दास को अपनी दया के कारण सम्झा जीर व प्रभु का भजन गान में तल्लीन हो गये । उस समय उनकी आँखा में अश्रु की अचिरल धारा बह रही थी । अप्पर उन मन्दिर में भी गये—जहाँ भगवान का वास है, और जो पावन पवती मदाना और तीर्थस्थलों में स्थित थे । एम अनेक स्थलों में अप्पर तिरप्पैगिलि से चलने के बाद गये और अन्त में वे तिरुवनामलई जा पहुँचे ।

अप्पर की यात्रा एक एसी विश्वास की यात्रा थी, जो तिरुमरकाडु से नागप्पट्टिनम त्रिचुरापल्ली तिरुवनामलई, और वहाँ से मद्रास के आम पास काची, तिरुवक्कुडम तिरुवामीयूर मद्रास के उत्तरी छोर पर मालापुर तिरुनेत्तियूर हाती हुई तिरुक्कालत्त जाकर समाप्त हुई । वहाँ के बारे में किंवदन्ती है कि एक सप और एक हाथी ने एक साथ मन्दिर में भगवान शिव की पूजा की थी । यह स्थान काचित्तव के पास एक पहाड़ी पर है । यही वह स्थान है जहाँ उस प्रभु का वास है जिसके बारे में किंवदन्ती है कि कनप्पर ने अपनी आँख निकालकर उनकी उस प्रतिमा में लगा दी जिसमें सचुरी तरह लहू बह रहा था । हर प्रकार से कनप्पर उन सभी सत्ता में सबसे पुराने सत् प्रतीक होने हैं, जिनका वर्णन सक्किपार में अपने पेरियपुराण में किया है ।

अप्पर पवत पर चढ़कर उस स्थान पर जा खड़े हुए, जहाँ सदिया पूर्व भगवान ने कनप्पर का, जो अपनी दूरगामी आँख भी निकालने के लिए तत्पर था गये थे

हाथ धाम लिया था, और कहा था, 'रुको, वनप्पर !' उम दिन से शिवारी का पुत्र, जिसका नाम जन्म के समय से तिननाप्पन था वनप्पर के नाम से प्रसिद्ध हुआ और जिस भगवान शिव से स्वयं उस प्रदान किया था ।

वनप्पर पर भगवान न जो दया दृष्टि की थी, उसका स्मरण से विचलित हो कर अप्पर गान लगे

देखो—उस निधन की ओर देखो
जो अपने लिए भोजन भी नहीं जुटा सकता ।
देखा,
उम अपूर्व वाची के 'वम्बन को देखो
जिमके पास
भगवान की दया भिक्षा के अतिरिक्त
कुछ भी नहीं है खाने के लिए ।
देखो,
शमशान के उस वीर की ओर देखो—
दोपरहित स्वर्णखण्ड (अग्नि शिखा) की ओर देखो ।
देखो उसे जो बहुमूल्य जवाहरातो के पवत जैसा है,
देखो,
पत्थर की इस चट्टान को देखो,
जो सातो ससार को—
बलपूर्वक धामे हुए है ।
देखो,
असुरो (राक्षसो) के उस राजा की ओर देखो
जिसमें म देख रहा हूँ—
कालत्ति में—वह मुझ में है ।

तिमु० प्र० ६ गीत ८ पद १

यही वह स्थान था, जहाँ अप्पर के हृदय में कलाश पवत पर जाकर भगवान शिव का दर्शन करने की जदम्य लालसा में जन्म लिया ।

कैलाश की ओर

सक्विपार न लिखा है

जन्म और मरण के रोग चक्र का
जो एकमात्र निदान है
और जा वास करता है—
पवता पर
ऐसे प्रभु की आराधना कर,
और प्रभु के वरदान से प्राप्त कर
उमके प्रति प्यार और आदर से पूण
और एक आन्तरिक इच्छा के वशीभूत होकर
वे चल पड़े—

उत्तर दिशा की ओर ।
अनेक ऊँचे-ऊँचे पवतो को लाघते,
कन कल करती सरिताओ को पार करत
अनेक प्रदेशो को
बिना कही रुके पार करते हुए
वे जा पहुँचे
तिरुवरपदम—

जहा है निवाम उम महान प्रभु का,
जिनकी बडी बडी आँखें हैं,
जो जो स्वयं भगवान विष्णु हैं ।

पद ३४८

यहाँ पर अप्पर ने तिरुवरपदम के भगवान का जिह मल्लिकार्जुनम भी कहत है पूजन किया । भारतम वक्ष को ससृष्टत म अजुनम श्रुत हैं और चूकि इस पहाडी प्रन्थ म यह बहुत अधिक पाया जाता है इस इमी नाम से जाना जाता है । तमिलनाडु म दा और स्थान एस है जिनका नाम भी इसी कारण से इसी प्रकार वृ तो के नाम पर रखा गया है । इनम से एक है तिरुविडईमन्दूर, जो चोलनाडु म है ।

सक्विपार न आग लिखा ह

अप्पर चले थे
 केवल यही विचार गर
 कि जायेंग उस कैलाश की ओर
 जा हिमाच्छादित है
 और जहा वास है—
 त्रिशूलधारी प्रभु ना
 ये नहीं चाहते थे
 अथ कोई भी स्थान देयना ।
 घिरे हुए अपने भक्तों मे—
 वे जा पहुँचे उनाटन
 पार कर के आन्ध्र की सीमा

उपयुक्त पद ३५०

जब पहुँचे वे उस स्थान पर
 जहा समाप्त होती थी
 काली मिट्टी वाले प्रदेश—‘कर्नाटन की सीमा,
 वे चल पडे आगे, और आगे
 पार करत हुए जगला को,
 चिह्नित करते हुए उन सभी सीमारेखाओं को,
 जिन्हें वे छोडकर आगे बढ जाते थे
 पीछे छोटते हुए
 पावन नदियों के घाटों को
 और ऊँची-ऊँची पर्वतमालाओं को—
 हरे भरे मदानों को पार करते हुए
 जा पहुँचे वे मालवा—
 जहा ऊँचे-ऊँचे वक्षों से भरे
 जगला को पार करने मे असमर्थ
 सूय भी लौट जाता है ।
 उस प्रदेश को पार करके
 कठिन रेगिस्ताना में होकर
 अपने पीछे छोडते हुए लाढा प्रदेश
 जहा अनगिनत है धूमशालाएँ
 मेघाच्छादित पर्वतों,
 जगला और सारी सीमाओं को लाघते हुए
 वे जा पहुँचे

मध्यवतिरम मे जहाँ कमल के
फूलो मे मुशोभित ताल थे

उपर्युक्त पद ३५१ ५२

बनाटक राज्य की सीमा पार करने समय अप्पर १ गाकरणम् की यात्रा भी
की, जो मामगोआ और मंगलूर ५ पश्चिमी तट पर स्थित है। तमिलनाडु के मती
में स केवल अप्पर ही इस तीर्थस्थल पर गए थे। यहाँ के मन्दिर में स्थापित शिव-
लिंग की विरायना के कारण ही इस स्थान का नाम गाकरणम् पड़ा है। इस शिव-
लिंग का आकार गऊ १ कान की तरह है। इस लिंग के सामने छड़ हाकर अप्पर
ने प्रार्थना की

यही है वह स्थान,
जहाँ भगवान शिव का वास है
देखो, उसकी आर दूजो, जिसने मिलन कराया है
चन्द्रमा और गंगा के निमल जल का—
देखो, उसकी घुघराली अलका को देखो,
देखो उस, जो अमृत बन जाता है
अपनी शरण में आनेवालो के लिए
देखो, उसकी ओर जिसने नष्ट कर दिये थे
असुरो के व तीन स्थान—
जो हवा में लटक हुए थे,
देखो, उस प्रभु की ओर देखो
जो वही रूप धारण कर लेता है
जिस रूप में उसके भक्त उसकी पूजा करते हैं।
देखो, उसकी ओर देखो
जिसने चारो वदो का मधुर स्वरो में गान किया है,
देखो, उसे जो वदिन मन्त्रो में छिपा हुआ है,
वही वसा है समुद्र से घिरे, गौकरणम में—
सदा और सबदा।

तिमु० प्र० ८ व० ४६, पद १

आगे सक्किपाय न निखा है
अप्पर ने यह प्रदेश भी पार किया—
जिसके चारा ओर है वही पावन गंगा,
जो आकाश से उतरकर,
हिमालय की गोद में मचलती है,
घरती पर बलघाती और बहती है।

वाराणसी में वाम करनेवाले शिव की
 जिनकी घुघराली हूँ जटाएँ—
 अप्पर ने बहुत लगन में,
 बड़ी त्रिपायों से आराधना की
 यही पर उ होने,
 उन सबको पीछे छोड़ दिया,
 जो अब तक उनके साथ चले आ रहे थे
 आर गंगा को पार करके
 वह शब्द चतुर अप्पर
 हिमाचल में चरणों में जा पहुँचे ।

उह नहीं थी चिंता
 कि मामने हूँ सघन जगल
 जहाँ ऊँचे ऊँचे वृक्ष छटे हैं सिर उठाये
 —कि उह नहीं मिल रही है—
 कोई एक पगडण्डी भी,
 जिससे वे जगत को वेधकर
 आगे बढ़ सकें,

व तो प्रभु के स्नेह में
 डलने भोग चुके थे
 तन में, मन में
 कि उन्होंने छोड़ दिया
 खाना सूखी पत्नियाँ, कद मूल और फल भी ।
 और चलते रहे, चलते रहे
 दिन और रात और जा पहुँचे
 अजेय कैलाश पर्वत पर ।

ऐसे भक्त की राह में
 —जो घोर अंधकार में भी बढ़ा जा रहा था
 अपने लक्ष्य की ओर—
 जो आने से डरते थे
 —वे नशस और खूबार जानवर भी
 जो प्रसिद्ध हैं अपनी निर्ममता के लिए ।

अब प्रभु का वह भक्त

वेदम—

उस राह को हृदय से लगाये

छाती के बल चढ़ने लगा था

जिसमे मे—

भयकर ताप के कारण उठ रहा था धुँआ-सा

जब अप्पर की छाती का मास भी छिल गया

आर बिखरता चला गया उम लम्बी राह म,

पसली की हड्डिया तक

चटक गयीं ।

लेकिन फिर भी, अप्पर का

मन मस्तिष्क केवल

प्रभु के ध्यान में डूबा हुआ था ।

आर उस कठिन लक्ष्य को पाने के लिए आतुर था,

उम नगन ने प्रभावित होकर डूबा अपने प्रभु को ।

अपने जर्जर आर कृश शरीर को लेकर

वे राह पर जैसे—

लुढ़कते से चले जा रहे थे—

जहाँ कोई भी व्यक्ति पहुँच नहीं सकता ।

इस प्रकार उस राह पर

जब वे बढ़ते जा रहे थे,

उनका समस्त शरीर लुज हो चुका था,

केवल उनका ध्यान ही आगे-आगे चल रहा था

और चलकर उस

अवर्णनीय कलाश—शिखर तक जा पहुँचा था ।

जहाँ तब, शरीर का था सम्बन्ध

जब समस्त अंग शिथिल हो गये

और आगे रेंगने का भी रहा नहीं

बाँडे सवाल

तब भी उस दुदमनीय राह पर

लेटा हुआ था—

तमिल का वह महान सात ।

प्रभु,
 वह महान प्रभु,
 जिसने डाल रखी है गले में
 सर्पों की माला,
 और जिसने अपनी कृपा-दृष्टि
 अब तक नहीं की थी
 उस सत पर
 —जो कैलाश की ओर बढ़ता चला जा रहा था
 व्यग्रता से—
 कि उसका यह भक्त
 अभी पृथ्वी पर कुछ दिन और
 मधुर तमिल में उनका भजन करे,

फिर जाय वहाँ प्रभु,
 ऋषि का वेश धारे—
 हाथ में था उनके, जल से भरा कमण्डल
 जिसके सहारे वे जा सकते थे—
 अपनी राह पर
 बहुत दूर तक ।

वह आय
 आकर बूढ़ हो गये
 अस्परक पाम
 देखा उन्होंने—
 शिवायत भरी दृष्टि से उनकी ओर
 आर अस्पर में नज़रें मिलने पर
 पूछा उन्होंने
 'नया कारण है,
 आय हा तुम इस दिशा की ओर
 इस बठिन दुग्म जाल में—
 जबकि तुम्हारा शरीर जजर हो चुका है।'

देखकर तपस्वी की ओर
 जिनकी कमर में लिपटी थी वृक्षों की छाल,
 और जनेऊ था, जिनके वक्षस्थल पर,
 जिनके मस्तक पर, जटाएँ फैली थी—
 और शरीर में सुशोभित थी भस्म
 अप्पर, महान अप्पर ने सारी शक्ति बटोर कर कहा—

‘मैं आया हूँ यहाँ
 बहुत प्यार से,
 यह देखने कि किस प्रकार,
 विश्व का पालनहार रहता है
 कलाश के शिखर पर
 शैलजा के साथ—
 जिस पंचत माना के वक्षों पर मधुमक्खियाँ भी
 उसकी आराधना में गुनगुनाती हैं,
 हे महाराज !
 यही है मेरा ध्येय ।’

उसके यह वचन सुनकर प्रभु ने कहा,
 ‘क्या उम मनुष्य के लिए,
 जो पृथ्वी पर रहता है
 उस कलाश शिखर पर पहुँचना इतना सरल है ?
 उस शिखर तक
 देवता भी नहीं पहुँच पाते
 जिनके हाथों में होता है कोदण्ड
 तुम डम भयकर वीरान स्थल में
 जो सूय की गर्मी से
 तप रहा है,
 क्या कर रहे हो ?
 यहाँ में वापस चले जाओ,
 यही है तुम्हारा कर्तव्य ।’

सुनकर महर्षि वचन
 जिनका शरीर था भस्मावृत

और वक्ष पर जनेऊ

अप्पर ने कहा—

‘नहीं, जब तक मे कर नहीं लेता दशन उस

कैलाशवासी प्रभु के, जो हमारे रक्षक है,

मैं नहीं लौटूंगा—

चाटे मुझे क्यों न करना पड़े

मृत्यु का भी आलिंगन !’

देखकर अप्पर का दृढ़ निश्चय

अतर्धान हो गया वह तपस्वी

कि अप्पर जान जायें

कि वह कौन था—

और उसी समय हुई आकाशवाणी

हे वाणी प्रवर !

हे महान साधक !

उठो !’

और अप्पर उठ खड़े हुए—

उनका शरीर हो गया एकदम स्वस्थ

और मुखमण्डल दमक रहा था—

आंतरिक आत्मा से !

‘हे महाप्रभु !

तुमने मुझे बना लिया है अपना दास

हैं वेदों के रचयिता

तुम आकाश में छिपकर

कर रहे हो मुझ पर अपनी दयादृष्टि !

कृपा करो मुझ पर—

कि मैं पहुँच सकूँ तुम तक

और देख सकूँ—

तुम्हें कैलाश शिखर पर विद्यमान

और कर सकूँ तुम्हारी आराधना !’

कहकर वे प्रभु के चरणों में गिर पड़े ।

अपने ऐसे भक्त को

जो उनकी आराधना कर

इतना ऊँचा उठ चुका था,
 प्रभु ने गम्भीर और पवित्र वाणी में
 दिया आदेश
 'इम ताल में कूदो
 आर हम पवित्र निरवैयार में स्थापित देखो
 ठीक उमी प्रकार
 जैसे हम रहते हैं—कैलाश पर ।'

अप्पर ने उठाया अपना मस्तक
 प्रभु का यह आदेश सुनकर,
 जिहान की थी वृषा उन पर
 वह बहुत प्रसन्न हुए—
 सुनकर उस प्रभु का
 आदेश
 जो मनुष्य के साथ होते हुए भी
 रहता है उनसे दूर आकाश में—
 आर आराधना करने लगे उसकी ।

अपनी शक्ति का कर पुन सचय,
 उन्होंने रहस्यमय पचाक्षरी का किया गान,
 और
 जैसा दिया था
 प्रभु ने आदेश
 कूद पड़े
 पास के तालाब में ।

ति० पद ३५६-७०

दक्षिण कैलाश

सङ्किचर न आग जिखा है

कौन समझ सखना है
 अनादि अनन्त प्रभु की महानता को ?
 हमारे सत ने
 जिन्होंने भोगे थे
 अनेक शारीरिक कष्ट
 उम्र तालाव में डूबकी लगा दी
 जिसमें तर रहे थे
 असह्य पुष्प
 जिनके ऊपर चमक रही थी जैसी ओस की बूंदें मुक्ता जैसी
 और महान आश्चर्य कि वे जा पहुँचे
 अश्वार के एक कुएँ में
 जिसमें उमापति का था निवास
 और फिर उसमें से
 निकलकर आ गये बाहर ।

उस कुएँ की दीवार पर
 चढ़ रहे थे जब अस्पर—
 जिसमें खिले थे अनेक सुगन्धित पुष्प
 उन्हें ज्ञान हुआ देवाधिदेव भगवान शंकर की
 महिमा और महानता का
 और उन्होंने कहा,
 'यही है, यही है प्रभु की अपूर्व कृपा का फल ।'
 वे खड़े थे उस स्थान पर
 नयनों से वह रही थी आसुओं की धारा—
 और आद्र था समस्त शरीर
 जैसे वे अभी
 तैर कर निकले हो कुएँ से ।

अप्पर जागे वढे—

अइयार नगर के निवासी प्रभु के
चरणों की पूजा करने के लिए

जहाँ गली गली में

मजे व वदनार

आंर दया उ होने

कि चल, जचल सभी अपने-अपने

साथियों के साथ हो उठे थे

ज्योतिमय !

हमार महान रात ने अभिवादन किया

मभी प्रकार के जीओ का

जा लग रह थे, शिव और शक्ति जैसे

आंर जि होने बदल दिया था अइयार को

उम हिमाच्छादित पवत शिखर में

जहा ह वाम प्रभु का

शैलजा के साथ—

इस प्रकार देखते हुए उस जुलूस को

अप्पर जा पहुँचे महाप्रभु के मंदिर ।

वाणी-प्रवर ने देखा,

सामने था विशाल मंदिर

जो बदल चुका था

कलाश पवत के रूप में

उ हान सुना,

वहा स आ रही थी

प्रभु का प्रायना समर्पित भाव से

भजन सतीतन की ध्वनि

जिन्हे गा रहे थे

विष्णु ब्रह्मा, इन्द्र जैसे बड़े बड़े देवता—

सभी के मन में था, प्रभु का ध्यान

उ होने सुनी

प्रतिध्वनि, सभी वेदा द्वारा की गयी

स्तुति की

—जो हर वार होती जा रही थी

तीव्र में तीव्रतर ।

उन्होंने देखा—
 एकत्र हो गये हे
 सुर, असुर, सिद्ध, ज्ञानी, (विघ्नतारर)
 एया रु, महान तपस्वी, योगी और मुनि
 ढोल की थाप पर गाते हुए,
 जिसे वजा रह थे अरम्बियार
 लज्जा से झुक जाते थे
 नीलकमल ओर नगी तलवारे
 इतनी प्रचण्ड थी वह ध्वनि
 कि दब गया था
 साता समुद्रों का गजन भी ।

उन्होंने देखा,
 बड़ी बड़ी पवित्र नदियों का जल
 गंगा के पीछे-पीछे आ कर
 परिणत हो गया पावन सरोवरों में
 कि उस जल से—
 प्रभु की पूजा सम्पन्न की जा सके

उन्होंने सुना,
 प्रभु के अनुयायियों ने
 हर सम्भव स्थान को—
 उनकी आराधना से कर दिया अभिमण्डित
 उन्होंने देखा,
 प्रभु के मेवक भूत-पिशाच गण
 उनकी उपासना में
 वाद्य यन्त्र बजा रहे हैं
 जिनमें से
 उठ रही है सगीत की लहरिया
 प्रभु का वाहन वृषभ
 इस प्रकार खड़ा था प्रभु के सामने
 अपने दो विशाल शृंगों के साथ
 कि मानो ही वे
 दाहिमाच्छादित पर्वत ।

अप्पर नो मिला था श्रेय अग्रगमन था,
जपने तप के बल पर,
उममे प्रसन्न होकर,
त्रे नदी और भातो के बीच से स्थान बनाते हुए
आगे चले गये ।

वहाँ हमारे उस घाणी प्रवर ने देखा,
कि प्रतिष्ठित थे
दयानु प्रभु गिरिराज कुमारी के साथ
जो विराज रही थी उनके वाम भाग में ।
ऐसे लग रहे थे, भगवान शिव
मानो पटी हो मूंगे की—

चट्टान

जो चमक रही हो
एक पारभासी दीप्ति में
और पत्ते की बल्लरी
छा गयी हो हिमगिरि शिखर पर ।

उहीने

अपने आँखों में भर लिया
आनन्द सिन्धु को
और फिर हाथ जोड़कर भूमि पर गिर पड़े ।
उठे, और फिर लोट गये उस प्रभु के सामने ।
अपनी प्रकम्पित देह लिए खड़े थे
वे विश्व के स्वामी

भगवान शिव के सामने—

कभी नाचने लगते
कभी गाने लगते
और कभी रोने लगते ।
कौन कर सकता है वणन
कि प्रभु के इस सच्चे सेवक
का उस क्षण में
कितना आह्लाद हो रहा था ?

इस प्रकार भगवान शिव ने अम्पर को ठीक वही रूप दिया दिया जिस रूप में व कलाश पवत पर वास करत है ।

भावाकुल और विभोर होकर अम्पर प्रभु की घूमर जटाश्री, बेशा का दणन करन लगे । जब यह दृश्य उनको आया स आशल ही गया, तो भक्ता क भक्त एक बार फिर जाकुल हो उठे कि कुछ देर जीर व इस मनोहारी दृश्य से अपन नना का तप्त व र सक्त, किन्तु अतत उहान यह कह कर स्वय को सात्वना दी— 'सम्भवत इस समय प्रभु की केवल इतनी ही कृपा है मुझ पर' और फिर भजन म लीन हो गय

इस अदम्य इच्छा के वशीभूत होकर,
 कि मे चल सकू
 उन सभी के पीछे,
 जो पत्र पुष्प लेकर जा रह थे मंदिर मे
 उम प्रभु का कीर्तिगान करते हुए
 जिसके शीश पर सुशोभित है अधचन्द्र का मुकुट
 और जिसके वाम भाग मे विराजमान है
 गिरिराजमुमारी उमा,
 जब मैं अइयाह जा रहा था,
 विना कोई पदचिह्न छोडे
 अपने पीछे, मैं आते देखा
 विशालदत्त गजराज को
 अपनी प्रिया के साथ,
 मैंने देखा, प्रभु के पावन चरणो को
 और देखा—एक ऐसा अपूव दृश्य
 जेमा पहले कभी नहीं दया था ।

तिमु० प्र० ४, द० ३, पद १

मैं आया—नाचता और गाता
 प्रभु के गीत,
 और कहता रहा—
 'हे पावन प्रभु ! तुम धन्य हो ।'
 मैं उस प्रभु के भजन गाता रहा—
 जिसके मस्तक पर चन्द्रमा है
 और उस देवी की आराधना करता रहा—

जो फूल में भी अधिक् कोमल
 वस्त्रों में सुशोभित थी ।
 जब मैं आइयार जा रहा था
 जहाँ नम्रधारी भगवान विष्णु
 उम प्रभु की पूजा कर रहे थे
 मैंने देखा, पत्निया ने जोड़ो को,
 चुपचाप वहाँ आत हुए
 आर दवा,
 प्रभु के पावन चरणों को
 एसा दृश्य देखा मैंने—
 जैसा कभी न देखा था पहले ।

उपयुक्त पद ~

उन्होंने देखा
 धारीदार बटेर को अपनी प्रिया के साथ
 मुर्गे का अपनी प्यारी मुर्गी के साथ,
 मोरनियों को अपने मोरों के साथ आते हुए
 रगविरगी चिड़ियों को
 अपने जोड़ों के साथ फुदकते हुए
 गजन करते हुए सुजर को उसकी मादा के साथ,
 काले भुरिल्ल को अपनी प्रियतमा के साथ
 सारस को अपनी सीधी-मी मादा के साथ
 हरे तोते को उसकी मादा के साथ
 और तूपभ को गाय के साथ
 सभी आ रहे थे उस राह पर—
 अपने अपने जोड़ों में ।

(उपयुक्त) एक पवित, पद ३ के उपरांत

अप्पर ने अपनी आँखों से वह अदभुत अपूर्व दृश्य देखा था—जो कदाही नहीं
 देख सकता था—उहान प्रयत्न जीव में प्रभु के दशन किंग । उ हान अपने चारों
 ओर देखा—और उहे केवल प्रभु ही दिखाई दिये—विभिन्न रूपों में और आकृ-
 त्तियाँ में ।

विनम्र ही शक्तिशाली होते हे

बहुत जनिच्छापूवक तिरवैयारू स जब अप्पर चले ता अनक तीयस्थलो के दशन करत हुए अत म तिरुप्पानतति पहुँच । इस स्थान न उ ह बहुत आर्कषित किया आर व यहा जापो समय तक रह । यहा के शिवमतिर म बैठकर उहोन प्रभु की प्रार्थना म अनक गीत रचे । बचल यही एन म्घाट है जहा अप्पर न मठ की स्थापना का जहाँ भवनगण पीढी दर पीढी रह सक आर भगवान शिव की आराधना कर सके तथा शन धम का अनुपालन कर सकें ।

यही पर अप्पर न अपने धमसार का प्रतिपादित करत हुए य० पद रचा

कोई बात नहीं

कि वे मेरे ऊपर न्यौछावर करते ह

सगनिधि और पद्मनिधि^१

अथवा

धरती आर स्वर्ग का राज्य—

हम नहीं मँजोयेगे

उनकी यह

नष्ट हो जानेवाली सम्पदा

यदि व नहीं ह महादेव के,

हमारे प्रभु शभु के

अनय उपामक ।

साथ ही,

नाह वे ऐसे लाग हो

जिनके हाथ पाव गल गये हा कौड से

और

चाहे व हा कसाई

जो भले ही खाल खींचते ह गा म.ता की—

और भक्षण करत ह

१ सगनिधि पद्मनिधि सम्पदा व एवक जत खरट और एन व अन्य ऊव आँक ।

गोमाग ता,
 यदि ते सच्चो भवत इ उस् प्रभु त
 जिम्बो जनाओ म गुणोभित गगधार
 मुना म्यान न मुता, वही इ न भगवान
 जिनती इम धरत इ पूजा

तिमु० प्र० ८ द० ६१, पद १

इस प्रकार अप्पर ने शिव सिद्धान्त में प्रतिपादित इस भाषा का पाठन करत हुए भजना का रचना की शिव भजना को भगवान शिव के समान ही पूजा जाना चाहिए। यही था वह मूलमंत्र, शिव भजना के उम भादवार का जिसमें पद्य जाति घम भाषा और लिंग का कोई विचार नहीं था।

जिस समय अप्पर वहाँ ठहर हुए थे तिरु पान सम्ब धर जन मद्राधीशा को घामिब वात् विवाद में परास्त करके और पाडियन महाराज के कूट का पवित्र भस्म की अदभुत शक्ति द्वारा सीधा करने उम म्यान की जात्र चल पडे थे। यह सुनकर कि वाग्मिगरज पूदुसली में ठहर हैं उहाने जपन भक्ता में कहा मैं शीघ्र ही वहाँ पहुँचूंगा और शहर के बहुरी भाग में जा पहुँचे।

वागोशर जा अब तक बहुत प्रसिद्ध और मसार में पूजनीय भी हो चुके थे, यह जानकर बहुत प्रसन्न हुए वे अपनी आँखा में सबई में जमे उन तिरु पान-सम्ब धर का जा तमिल भाषा के विद्वान थे—अपनी आँखा में जो शरकर दशन करने के लिए तथा उनसे मिलने के लिए अत्यंत च्छुन होकर चल पडे।

जिस स्थान तक तिरु पान सम्ब धर आ पहुँचे वे वहाँ जाकर अप्पर भक्ता की उस टोली में मिल गये जा उह घेरे हुए थी। वहाँ उहाने चुपचाप बालक को अपनी श्रद्धाजलि अर्पित की और स्वयं से कहा

‘मैं उस रत्नजटित पालकी को अपने उस बूडे शरीर से उठाऊँगा, जिस पर वह बालक विराजमान है जो इस क्षत्र के लोगो को एक नया जीवन देने आया है।’ यह माचकर वे आगे जाए और उ होने लागा के साथ मिलकर उम पालका को कथा दिया और प्रसन्न चित्त होकर आगे बढ़। उनकी आर किसी ने ध्यान नहीं दिया। सक्त्तपार न लिखा है

मगान से त तिरु पान सम्ब धर न पू दुहत्ती के पास पहुँचकर पूछा—

‘कहाँ है अप्पर?’
 द्रवित हृदय में कहा अप्पर ने,
 ‘मैं आपका दास—
 आपकी कृपा का पात्र बनकर

आग पाकर आपा चरणों की सेवा का
 पाकर आशीर्वाद यही पडा हूँ
 इतना सुनते ही—
 बालक क्रुद पडा
 पालकों में—
 और दु खी मन से
 अपर के पास आकर उन-के चरणों में
 गिर पडा ।

किन्तु
 इसमें पहले कि बालक का शरीर
 छू पाना भूमि का—
 स्वयं वाणी मन्नाट ने साष्टांग प्रणाम किया ।
 हाथ में
 मृगछाला लिए हुए
 प्रभु के भक्तों ने
 इस अद्वितीय घटना को देखकर
 जोर-जोर से
 जयघोष किया
 और दोनों की पूजा की ।

ति० पद ३६६ ६७

तिरुवत्तुवर ने कहा था—

विनम्र ही सदा और सबदा शक्तिशाली होंगे ।

श्रीन क गूढ रहस्यों को प्रतिपादित करने वाले चुआगसे, तथा सत सा-जोत्से
 ने वत्तुवर से सदियो पूर्व उपनिषद लिखनवाले महात्माओं के समान अपनी
 दस पीढ़ियाँ स पहले के पूज्य वाले चमैफू द्वारा छोड़े एक अभिनेत्र का इस प्रकार
 प्रतिपादन किया है जैसे कि तिरुकुरल सूत्र की अग्रिम टिप्पणी लिख रहे हैं ।

जब मेरी पहली बार पदों नति हुई मैंने अपना सिर झुका लिया ।
 दूसरी बार पदों नति होने पर मैंने अपना कमर तक झुककर आभार
 प्रदर्शित किया । तीसरी बार पदों नति होने पर मैंने साष्टांग दंडवत
 किया । मैं गलियाँ क बिनारे खडा ऊँची दीवारों के पास गया किन्तु
 त्रिणा का भी साहस नहीं हुआ कि मेरा अपमान कर सके ।'

जहाँ तक साधारण व्यक्तियों का प्रश्न है चुआगसे ने लिखा है
 पहली पदों नति पर उनके कदम लड़खड़ाने लगते हैं । दूसरी बार

पत्नी प्रति पर व आगमात न गानन मगत है । जब तीसरी बार पत्नी प्रति
गती इ ता य स्वयं का युजग समझा मगत है ।

ना मता क मधुर मिला की घट एक एगी अद्वितीय घटना है, जो दुबारा
कभी नहीं घटी जोर जा विमता न कारण शक्तिशाली बात का एक उद्घृष्ट
उत्पादन है ।

उपसंहार

तिरु ज्ञान सम्बन्धर न अप्पर का मदुर म जन मठा गीशा ना परास्त करन की गाथा सुनाधी जिमे सुनकर अप्पर क हृदय म मदुरे के मदि र म निवास करन-वाले प्रभु के न्शन करन तथा पाडियनाडु का दखन की इच्छा जागत हा गया । अप्पर मदुर जा पहुच जहाँ मुट्य मन्नी महाराजा तथा महारानी न उनका भव्य स्वागत किया । उनस विदा लकर व दक्षिण की ओर और आगे चल पडे और रामश्वरम पहुच गय । यहा उहाने उन प्रभु क दशन किय जिनकी पूजा भगवान राम न की थी और फनस्वरूप व रावण का वध करके उसके पापा का फल दे सकन म सफल हुए थे, जा इस दंड का भागी हात हुए भी एक ब्राह्मण था ।

अत्र अप्पर पुन उत्तर दिशा की जोर चल पडे और पूम्गलूर पहुँचे । यही वह स्थान था जिसकी स्मृतियाँ उनक लिए बहुत मुखद थी, क्योंकि यहा तिरु ज्ञान-सम्बन्धर म भेंट होन पर व दाना लगभग एक बप तक साथ रह जोर उहाने भगवान शिव के अनन्य मन्त्रा के दशन किय ।

यही पर अप्पर न अनन्य दशक लिखे और एक लम्बे समय तक प्रभु की सेवा करत रह । प्रभु की सेवा करन का उनका अनाया तरीका था—मदि र क परिसर का घाड यखा रन्ति रखना और रास्त म पडे पत्यग का हटाना ।

जिस समय व अपन इम काय म सलन थ, भगवान शिव न उनक सामन एक एक बाधा टाल दी । इसका उद्देश्य उनकी परीक्षा लन का मतना नही था, जितना ससार को यह बताना था कि अप्पर कितन विरागी यकिन थ । इच्छा-जा का दमन एक ऐसा अतिम और आश्चर्य अनुधानन ह जिमका पालन माथ की कामना करन वाल प्रत्येक यकिन को प्राप्त करना ही पडता है । यह स्मरण रखना चाहिए कि तिरुक्कुरल म वास्तविकता की पत्रड विषय के अध्याय के पश्चात् तसी विषय पर अध्याय लिखा गया है, क्यानि व्यकिन मात्र का स्वाभाविक रूप स स्वय का किसी न किसी स सम्बन्ध करना पडता है । यदि वह एक चीज का छाडता है । तो किसी दूसरी चीज स जुड जाता है । तभी तो तिरुवत्तुवर न कहा है

उस प्रभु से नाता जोडो
जो किनी से जुडा नही
उस बन्धन मे बँधे रहो,

तार्त्तुम

दूमरे अधनो मे हो सरो विमुक्त ।'

प्रभु की इच्छा थी कि जहाँ भी अप्पर का दण्ड चले, धूल मिट्टी जार बालू के साथ साथ स्वर्ण और बहुमूल्य जवाहरात भी ऊपर जा जाय । इसलिए जब सचमुच ही मिट्टी और बालू म म ही जवाहरात तथा स्वर्ण की नहीं नहीं गालियाँ बाहर निकली तो अप्पर ने उह अपने को दण्ड पर उठाकर धूल के साथ साथ पास के ही एक कुएँ में उछाल दिया जिसमें मुर्गा धन कमल के फूल खिले हुए थे । सेविनापार ने इसका वर्णन इस प्रकार किया है

तव,

हमात्त मत

उम मन स्थिति मे पहुँच चुके थे—

जहा

कर नहीं सजते ये भेद—घास और बालू मे

स्वर्ण और हीरे-जवाहरातो मे,

तिरुपुगलूर स्वामी प्रभु की इच्छानुसार

आकाश से उतरी अप्रतिम अप्सराएँ

ऐसे थे जिनके ललाट—

जैसे खिचे हुए धनुष

वे नाचती रही, गाती रही

और फूलों की वर्षा करती रही—

उन पर

उनके पान आइ

कुछ इस प्रकार कि वे उन्हें

ममेट लेंगी अपने बाहुपाशों मे ।

अपनी बुधराली अलकों को लहराती,

डठलाती,

चली गयी उनसे दूर

वे फिर लोट कर आयी—मदन के साथ

आर, आखों मे भरकर वामना का सागर

धमती रही उनके चारों ओर,

या खड़ी रही उनके सामने—

अस्तव्यस्त और उन्माद-ग्रस्त ।

किन्तु अप्पर न इस पर कोई ध्यान नहीं दिया और व अपन काय म सलग्न रह। उन स्वा म उत्तरी अप्सराआ न अपन छल का उन पर कोई प्रभाव न दखकर उनके प्रति मम्मान व्यक्त बिया और वापस चली गयी।

अप्पर जा इस परीक्षा म सफल हुए थे, कुछ दिन वहाँ और रहे। तब उनके हृदय म प्रभु के चरणवमल रूपी म्यग म पहुँचन की अम्य सातसा जाग उठी और जान बहा।

विचारक हूँ मैं,

किन्तु

यदि मैं प्रभु के चरणो का ही ध्यान न करूँ

तो

मैं कैसे रहूँ, और किसका ध्यान करूँ ?

मैं, जिसका और नहीं है कोई सहारा,

अघा हो जाऊँगा—

यदि देव न पाया

केवल तुम्हारे ही अलकृत चरण !

हे प्रभु !

तुमने दी है मुझे यह काया

जिसके है नवद्वार।

जब सब बपाट हो जायेगे एक साथ बन्द

तब,

नहीं अनुभव कर सकूँगा मैं यह सब।

इसलिए हे प्रभु !

अभी, अभी और यही

मैं आता हूँ आपके चरणा की शरण मे !

हे प्रभुवालूर मे रहनेवाते मेरे प्रभु !

मैं आ रहा हूँ।

तिमू० प्र० ६, द० ६६, पद १

और उनसे साथ ही अप्पर न अपना नश्वर शरीर त्याग दिया और सदा-सबदा के लिए प्रभु के चरणो म जा बैठे।

अप्पर का सदेश

निभयता विश्वास विनम्रता और सेवा—उहा शब्दा म अप्पर क जीवन का इतिहास निरवह ।

जब पल्लव महाराजा ने अप्पर का अपा दरवार मे उन पर विश्वासघात, पाखंड और धम विराध का मुकदमा चलाने क दिए बुलाया था तो अप्पर न कहा था

'हम किसी के अधीन नहीं हैं ।

हमें नहीं है किसी का भय

हमार ऊपर

कोई भी विनदा आ नहीं सकती ।'

यही शब्द ये जिनके सहारे उ होन उस पागल हाथी का मामना किया जा एक पहाड की तरह उनके सामने आकर खडा हो गया था और उह सूड से उठा कर भूमि पर पटक कर गीद सकता था और उनके शरीर का क्षत विक्षत कर सकता था । भगवान कृष्ण ने अर्जुन का सुर और अमुर प्रवृत्तिया क विषय म (भगवद्गीता १६—१) बसाते समय निभयता का उन वृत्तीस गुणा म सर्वोपरि माना है जो देवताआ म पाये जाते है । तमिलनाडु को याय की राह दिखानवाले तिरवन्लुवर न कहा है भय सचमुच ही बुर यक्ति म सद यवहार लान का आधार है ।

जिस क्षण म अप्पर जादि कई वीगतनम म प्रभु शिव के मन्दिर म गय जहा उनकी प्रतिमन उ ह धम का विराध करन के आरोप का प्रत्युत्तर तन क लिए खडा किया था उनक हृदय म भय कपूर की भाति उड गया था । उम सर्वोच्च व्याघ्रीश के व्याघ्रानय म उहोने निभय होकर जारदार शब्दा म कहा था कि वे निर्दोष है । उम समय ता ऐसा प्रतीत हाता था माना व निभय हान का प्रयास कर रहे हैं क्यकि उन पर जा आरोप लगाय गये थ वे वृहन भयकर थ । कोई भी गुनहगर इतनी निर्भीकता मे स्वय को निर्दोष नहीं कह सकता ।

पल्लव महाराजा द्वारा लगाये गय आरोप क खडन का यह उत्तर उसी निर्भीकता से उपजा था जा उनके हृदय मे राजाआ के राजा प्रभु की सत्ता म असीम विश्वास क कारण उत्पन्न हुई थी । अपने हृदय से भय का परित्याग कर देने के कारण ही वे कह सके थ

यह विस्तृत विश्व ही है हमारा देश ।
 हर नगर और ग्राम में
 कोई भी, जो पताता है भोजन,
 पाएगा उसे वह सभी
 जत्र अपिा हर देगा किसी अतिथि को,
 आर
 कभी नहीं चकेगा वह किसी मिथारी को
 दन से भिक्षा ।
 हमारे आश्रय हैं सम्मिलित आगन ।
 पथ्वी माता कभी नहीं,
 कभी नहीं हटायेगी उनको, जो
 पडे है उसके वक्ष पर ।
 यह कोई बूठी बात नहीं है,
 सचमुच ही—एक ध्रुव सत्य है यह ।
 उस प्रभु ने,
 जिसने पास है नदी जसा विशाल वाहन,
 उसन हम समेट रखा है, अपने अक मे ।
 हममे
 नहीं है कोई भी दोष ।
 नहीं है अब हमारे मन में इच्छाएँ, अभिलाषाएँ
 हम पा चुके हैं मुक्ति इनसे ।
 हम वाध्य नहीं हैं
 रि सुन
 उनसे आदेश
 जो,
 चहते रहे ह इधर-उधर
 मजे हुए,
 सु दन वस्त्रो और स्वर्णिम आभूषणो से ।

तिमू० प्र० ६, द० ६६, पद २

इस निर्भीकता का सार इन शब्दों में है कि जिस प्रभु ने हमें अपना अन्न द
 रखा है, उस किसी का आतंक डरा नहीं सकता । एक अर्थ म्यान पर अप्पर ने
 कहा है— हम प्रभु के संरक्षण में रहने वाले उपजीवी हैं ।'

भवन मत पाल न अपन प्रमिद सात्त्विक ग्रय म यहूदिया से कहा

‘और विश्वास क्या है ?

विश्वाम मे मिलता है बल हमारी आशाओ को
जौं हम उन सन्धो ॐ प्रति हो जाते हे विश्वस्त
जिन्हे हम देण नही सकते ।

उन्ही के विश्वास के लिए बन जाते है

दस्तावेज

वीने हुए कल के लोग ।’

विश्वाम की महत्ता और जीत क विषय म कई उदाहरण दन के पश्चात मत पाल न भी अ त म कहा था

क्या अब भी मुझ कुछ और कहन क आवश्यकता है ? मेरे पास सच-मुच इतना समय नहीं है कि मैं गिडियन बरक सैम्सन और जेफना, अथवा डविड सैम्पुजल तथा अन्य सत्ता की विस्तार स चर्चा कर सकू । विश्वास क महारं ही उ होन राज्या का तटना पलट दिया था याय की स्थापना नी थी और प्रभ के वादा को पूरा हाते देखा था । उहोने गरजत हुए सिंहा का मामना किया अभिन की लपलपाती लपटो की पिपासा शात की और तलवारा के दार स भी मत्यु पर विजय पायी । उनकी दुजलताए ही उनकी शक्ति जन गयी युद्ध मे वे शूरवीर बने और उहान बाहरी जानमणकारिया की फौजा को भगा लिया । महिलाओ को दुवारा उनके मत आन्माय जीवित होकर मिल गय । उनम से कुछ लोगा का अतिम सास तक बष्ट और पीडा दी गयी उह छाडा नहीं गया कि वे पुन नया जौर बहुतर ज म ले सकें । कुछ अन्य लागो को उपहास बेत का माग और यहा तक कि कारागार और वेडियो क व धन भी सहन पड । उन पर पत्थर फेंके गय उह आरी से दो टुकडो म चीर दिया गया उन पर तलवार चलायी गयी और भेड व करिया की छान पहनकर गरीबी जार दुख स चूर इधर उधर घूमत रहें । व इस ममार म रहन योग्य नहीं थे बयाकि व बहुत अच्छे थ । वे रेगिस्तानो पहाटा म रश्नवाल एम शरणार्थी थ जो गुफाओ और भूमि के जदर गडडा म टिपत फिरत थे । य सभी प्रभु म अपन दद विश्वास के लिए स्मरणीय है ।

एमा ही जखड विश्वास अप्पर की निर्भोक्ता का आजार था । जौर यही उनक आत्मविश्वास, साहस तथा दन सकल्प का सात था ।

रस श्रद्धा से उत्पन्न आत्मविश्वास के कारण ही अप्पर ने अप्पूणि आदिहल के ज्येष्ठ पुत्र को प्रभु की आराधना में दस तक गिनती पूरी करत करत जीवित करन का प्रयत्न किया था। जीर इसी विश्वास जीर श्रद्धा न ही उह यह साहस व मक-न करन की क्षमता दी जी जिसके कारण व राजात्थि से कैनाश तक पैदल चल सने, पूर उस्ताह के भाय जाग बढ़ मक, और छाती के उल रेंगकर यात्रा पूरी कर सन अथवा जीर कुछ भी उह जीवित नहीं रय सक्ता था। यही नहीं, इसी विश्वास के कारण ही कलाशवासी भगवान शिव की जाणा ने व मानमरावर म कद सन रि और तिरवैय्यार के कुएँ में पहुच।

विश्वास में पवत भी डह जात है। दूनरा की सेवा करना ही अप्पर का धर्म था। व सवा कर्म के लिए ही इस ससार में आय थ। जय के धनाडय जमीदार थ उन्हो तालाय खुदवाय कुएँ बनवाय, प्याऊ लगाय, धमशाला जा के लिए धन दिया विद्वाना का पुरस्कृत किया और निधना का खुने हाथा न दान दिया। इनरी डविड थोरु न बहा था

काई भी व्यक्ति उतना ही धनी होता है, जितनी वह अपनी सामर्थ्य के अनुसार अच्छाईयाँ करता है।' अप्पर इतन ही धनी हाना चाहते थ इसलिए उ हुनि 'धमदान भी आरम्भ कर दिया। प्रभु के मंदिरा की झाड पखाड मिट्टी और बालू से बचान के लिए वे शारीरिक श्रम करत थ कि प्रभु के भक्ता के पैरा में कही कांटे न चुभ जायें, अथवा चाट न लग जाय। इस प्रकार वास्तव में व प्रभु के भक्ता के चरण कमला की ठीक उसी प्रकार से पूजा करत थ—जिस प्रकार उहान उस 'बालक' के नह परा की पूजा था जो अभी तरण भी नहीं हुआ था, क्योंकि अप्पर की शक्ति उनकी विनम्रता में ही थी।

हमारे इस ससार के लिए, जहाँ हम नित्य उद्वेग से थरथरात हाथा से प्रात कालीन समाचार पत्र खालत ह, अप्पर न निर्भीकता, विश्वास, श्वेच्छा से धारण की गयी निधनता, सवा भाव और विनम्रता का ही संदेश दिया है।

नालवारो मे अप्पर का स्थान

तिरुवान्तूर धर अप्पर जयवा विरु नादुक्कु अररर, मुन्दरामूर्ति स्वामिकल आर मानिकववाचरर का नाग ध्यार म नाववार कृत है। उन चारा म मानिकववाचरर मवमयम अ जा तीसरा शताब्दी म हुए थे। तिरुवान्तूर सम्बन्धर और अप्पर जसा वि हम पत्र चूक है समकालीन थे। मुन्दरामूर्ति स्वामिकल उनका एक शताब्दी बाद हुए। मानिकववाचरर का विशेष काय था तिरुवाचरम, जा रहस्यमय आध्यात्म विद्या की एक पुस्तिका है। इसम आत्मा द्वारा परमात्मा म लीन हान क प्रमाणा का विवरण है। इन पदा का करणा उत्कठा निवदन स्पतिदा एव प्रथम म विश्वास का एसा प्रभाव है कि इन मभी ५५६ पदा का पट्टर आये नम हा जाती है।

तमिल भाषा म लिख गए भक्ति साहित्य म यह अद्वितीय ह। अप्पर क गीत बहुत सुन्दर हैं, फिर भी उनम एसा जानपण नहीं है।

तिरुवाचरम का विषय भगवान शिव क तीर्थ स्थला की यात्रा नहीं है। मानिकववाचरर का ध्यय यह नहीं था कि वे यात्रा का अपन धम क महात्म्य की आर आवर्षित कर और उनन भी वही कर्म था उसका यह ध्यय कि वे अथ धर्मों के प्रभाव का दूर रखन का प्रयास कर। तिरुवाचरम ता एसी आत्मा की कथा है जा प्रभु म चिरमिलन क लिए राह खाज रही ह। यह एक आध्यात्मिक यधू और पावन क की कहानी है जिसम उनक प्रथ तथा मिलन का वर्णन किया गया है। इस कथा म ब्रह्म स्वय मानिकववाचरर है। अप्पर का विशेष क्षन तिरुताडगम है किन्तु प्रभाव म उनका स्थान मानिकववाचरर क समान नहीं हा सकता। तकिन यह अप्पर की दुर्लभा नहीं है। मानिकववाचरर का मुकदमा एक ऐसे अभियोगी का मुकदमा है ता कभा करण हाकर और कभी उत्तजित हाकर अपन जीवन की याचना कर रहा है।

यहाँ मुन्दरामूर्ति स्वामिकल क बारे म दा शब्द कहकर उनरी बात समाप्त की जायगा। अप्पर का १२५ तीर्थस्थला की यात्रा तथा उनक ३१२ दशका क मुकाबल, जिसम २०६४ पद है उसक मुकाबले मुन्दरामूर्ति स्वामिकल को ८३ तीर्थ यात्राएँ सौ दशक तथा १०२६ पद वही स्थान नहीं पात। उनक अतिरिक्त मुन्दरामूर्ति स्वामिकल क तवारम का अध्ययन करन पर ऐसा लगता है जम हम एक एम दगात्र। अथवा ढीठ भिखारी की प्रयत्ना सुन रह है, जा अपना पारि-

वारिक कठिनाइया स दु खी और प्रस्त है यथा दा स्त्रिया के प्रम की दा स्त्रिया से विवाह की और दो परिवारो का भरण पापण करन की परशाना । यह सच है कि सुन्दरामूर्ति स्वामिकल के लिए एक असुविधा यह भी थी कि उनम कुछ ही समय पूव प्रभु क दा परम भवन तिरु पान सम्बन्धर तथा जप्प हा चुक थ । यह भी सभाग ही है स्वय सुन्दरामूर्ति स्वामिकल न, अचेतन एव सरल भाव से ही अपन एक गीत म लिखा है कि व अपन पूवजो क कठ हुए शष्पा का ती ट्टरा रहे हैं ।

यदि काइ मही तुलना की जा सकती है तो वह केवल अप्पर और तिरु पान-सम्बन्धर क बीच ही की जा सकती है । अप्पर की उल्लिखित रचनाओ क मुकाबले म तिरु जान सम्बन्धर न २१६ नीध यात्राए की थी ३८८ दशक लिखे जिनमे कुल मिलानर ८१६२ पं थ । यद्यपि इस प्रकार उट्टान अप्पर म अधिक् कार्य किया फिर भा तमिलनाडु क जनसाधारण क हृदय पर अप्पर क ही गीतो का कही गहरा प्रभाव पडा । कहन ह कि इस शताब्दी क पूर्वार्द्ध म हुए एक प्रसिद्ध विद्वान का जा लगभग प्रतिदिन जनक साहित्यकारा को अपन घर आमंत्रित करन थ, और जिस लाग एक महान उपलब्धि समपत थ कथन था कि तिरु पान-सम्बन्धर के गीता म चापल्य अधिक् है और वे बहुत उपयुक्त नहीं हैं । सम्भवत व यह भूल गय कि तिरु पान सम्बन्धर वस्तुतः बाल भवन ही थ, जिनम आश्चय करन की एक अद्वितीय प्रतिभा थी । अत उनकी कविताओ म उनका वचन ज्ञानता सलकता है—और मही उपयुक्त भी है । उनम कभी कभी एन ही बान वार बार गेहरायी गयी है जो किसी भी बालक की विशयता हती है । एम उनक गीता म प्रकृति क आश्चर्यों क प्रति और आतंकित चकित होन का भाव भी है । ग बच्चा की एक और विशयता होती है । एस बालक की अभिव्यजना की तुलना एव एम प्रौढ सत की रचनाओ स करना जो अनक परीक्षाओ और याया-क्षया की धरिया म तपकर पावन हो चुक थ इस बालक के प्रति अयाय करना ही है ।

मसार म, तिरु पान सम्बन्धर के पक्ष म सारी बातें कहन क पश्चात मैं यह भी मानना हूँ कि व अपन ३८३ दशना म कही भी भक्ति की उस परकाण्ठा तन नहीं पहुँचत, जा अप्पर पण्टम तिरुमुर के निरुताडकम् म नियानवें दशका के प्रत्येक ६८० पदा से अलकती है । किंतु समार मे उन दाना का काय भिन था । अप्पर ता एक पश्चात्ताप करनवाले प्राचीं एक मुमु दु मुक्ति का पान क लिए आकुल प्रकित थ । उनक गीता म हृदय का असहाद सलकता है । दूसरी ओर तिरु पान सम्बन्धर मुमुशु न्ती थ । व तो श्वर काटि म थ जो अपन पूव जन्म म मुक्ति पा चुक थ । उनकी आत्मा म पिछले जन्म क कर्मों के कारण जन्म न्ती लिया था । तिरु पान सम्बन्धर की आत्मा

और वमता बहुत प्यार ही एक दूसरे से बितग हो चुके थे। उनकी आत्मा अपनी अच्छा से मानवता का उद्धार करना चाहिए था। कारण है कि निरुपान सम्बन्धनर ता म्पश, नयन अथवा मद्र पीशा आतिरवरि दीशा भी नहीं मिली थी, जिसमें भगवान् शिव अथवा गुरु अपने प्रशिष्य के हृदय पर अपने चरण रखते हैं। तिरु पात सम्प्र घर के म्बिवा मानिवा वाचकर मुन्दरामूर्ति स्वामिनल और अप्पर—इन सबन निरुवादि दीशा प्र प्त थी, उतान बाद पाप नहीं किया था, जिसे वे स्वीकार करते। उनमें कोई व नहीं थी, जिसे प्रनाश में लाया जाता। श्री रामकृष्ण परमहंस के दास जीवनाटि नहीं, ईश्वरकोटि थे। इन परिस्थितियां में उनकी तुलना अप्पर मुन्दरामूर्ति स्वामिनल अथवा मानिवावाचकर में करने का कोई अर्थ नहीं है। तो एक अनोखे व्यक्ति थे।

साहित्य की सर्वश्रेष्ठ रचना का उद्गम होता है जबुल अतर प्रेम दुःख में पीड़ा में भरा हुआ हृदय। और अप्पर का हृदय सचमुच ऐसा ही था। अतः कोई जासूस की बात नहीं है कि जय दाना सन्ता की अप्पशा उनके गीत का साधारण में अधिक प्रचलित हुए, क्योंकि इन गीतों से उनमें आशा और प्रेरणा का संचार होता है।

